मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सर्वांग अंक १५० • डिसम्बर-२०१८

कालुपुर मंदिर में दिवाली का उत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा के सानिध्य में कालुपुर मंदिर में बालिका की शिबिर

एकादशी यशाब्दी महोत्सव के अवसर पर असारवा गुरुकुल में सांस्कृतिक कार्यक्रम

कालुपुर मंदिर हवेली में एकादशी जागरण सभा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १२ ● अंक : १४०

डिसम्बर-२०१८

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	कालुपुर मंदिर के हनुमानजी	०६
०४.	अत्यधिक करुणा किये है	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन 'स्वरुप अमृत वचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	सत्संग बालवाटिका	२१
०८.	भक्ति सुधा	२४
०९.	सत्संग समाचार	२७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

आप सभी दिवाली के दिनो में छुट्टी के समय धुमने गये होगे । कोई अपने मंदिर में दर्शन हेतु आये होगे । कोई घर पर रहक दिवाली मनाकर आनन्दित हुआ होगा ।

चर्तुमास भी पूरा हो गया और नियमधारियो के नियम की पूर्णाहुति हो चुकी है । सर्वोपरी श्रीहरि के आश्रित लोग जीवन भर नियम चालू रखते है । सुख-दुःख में भगवान को भूलना नही चाहिए । जब कि भगवान श्री स्वामिनारायण अपना कितना ध्यान रखते है । अपना प्रारब्ध ही अच्छा है । वह उनकी कृपा है । हमारे इष्टदेव तथा उनके गुरु रामानंद स्वामी के पास से अपने आश्रितो के सुख के लिये दो वरदान माँगे थे । वह हम जानते है ।

अब १६ दिसम्बर से पवित्र खरमास शुरु होगा । जहाँ-जहाँ पर निवास करने वाले श्रीहरि के आश्रित हरिभक्त श्रीहरि को प्रस्थापित करे । अथवा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित देव मंदिर में प्रातः में श्रीहरि नाम स्मरण धुन करे । परिवार को भी धुन में ले जाये ।

अपना कल्याण करने वाले अपने इष्टदेव सर्वोपरी स्वामिनारायण भगवान है । भगवान स्वतंत्र है । उनसे कोई बड़ा नही है । अपना भाग्य अच्छा है कि ऐसे भगवान हमें मिले है । अपने कही जाने की जरुरत नही है । लोक परलोक के सभी सुख उनके शरण में जाने से स्वयं मिल जाता है । परमकृपालु श्री नरनारायणदेव ने श्रीनगर अहमदाबाद बना कर शोभित किये । इस कारण से यह शहर समृद्ध है । दो सौ वर्ष का पाटोत्सव करीब वर्षो में आ रहा है । हम सभी परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणो की प्रार्थना करें की द्विशताब्दी महोत्सव के समय समस्त विश्व आतंकवाद से मुक्त बने और सभी शांति का मार्ग अपनाये । दुश्मनी समाप्त हो और पत्ते-पत्ते पर स्वामिनारायण भगवान का नाम सार्थक हो ऐसी याचना करते है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०१८)

१९ विजय दशमी के ४६ वें प्राकट्योत्सव प.पू. मोटा (बडे) महाराजश्री और प.पू. लालजी महारजश्री के सानिध्य में हरिभक्तो ने धामधूम से मनाया ।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला पाटोत्सव अवसर पर आगमन ।

२८ बालवा गाँव में श्रीहरि आगमन (२००) वर्ष दिशताब्दी महोत्सव के अवसर पर आगमन ।

(नवम्बर-२०१८)

५ माणसा गाँव में नये मंदिर के भूमि पूजन को स्वयं के हाथो द्वारा करना ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर नूतन वर्ष पर परम कृपालु श्रीनरनारायणदेव का ऋंगार और अन्नकूट आरती स्वयं के हाथो से किये । बैठक में संत-हरिभक्तो को दर्शन तथा आशीर्वाद दिये ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया बालस्वरुप श्री कष्टभंजनदेव का पाटोत्सव अभिषेक स्वंय के हाथो द्वारा किये ।

१३ आनंदपुरा गाँव में कथा अवसर पर जाना ।

१६ नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर सोलैया (ता. माणसा) मूर्तिप्रतिष्ठा स्वयं के हाथो द्वारा किया गया ।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कडी पारायण अवसर पर आगमन ।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (अहमदाबाद) पारायण पर आगमन ।

१९ संत महादीक्षा स्वयं के हाथो द्वारा पूर्ण किये, सोनारडा नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का निरीक्षण करने जाना ।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर बणोल (भाल) १३ वें पाटोत्सव पर आगमन ।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धिपुर पाटोत्सव पर आगमन ।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर काली गाँव पाटोत्सव पर आगमन ।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर पाटोत्सव पर आगमन ।

२५ मुबराकपुरा मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर आगमन ।

२८ से ५ श्री स्वामिनारायण धर्म प्रवास ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०१८)

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा श्रीहरि आगमन (२००) वर्ष महोत्सव के अवसर पर आयोजित समूह महापूजा पर आगमन ।

२८ दहेगाम युवा सत्संग शिबीर पर आगमन ।

(नवम्बर-२०१८)

२८ थुरावास (ईडर देश) युवा सत्संग शिबीर पर आगमन ।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में समूह शारदा पूजन चोपडा पूजन स्वंय के हाथो से किया ।

२० कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर रंग महल श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक हेतु आये ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली तुलसी विवाह के अवसर पर महापूजा का आगमन ।

२७ से ३ अमेरिका धर्म प्रवास

कालुपुर मंदिर के हनुमानजी

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

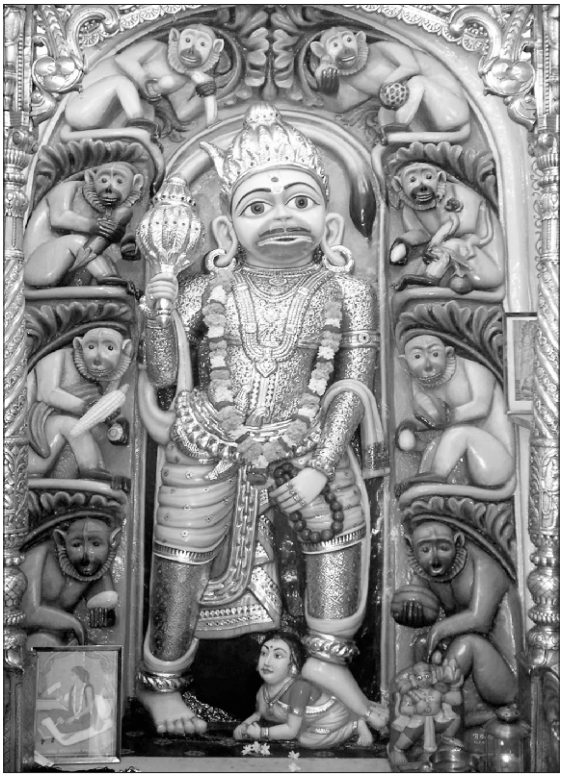

सर्वावतारी परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण ने सर्व प्रथम अहमदाबाद के बारे में सज्ञान लेकर श्री नरनारायणदेव पधारे । श्री नारायण अवतार आदि सत्ययुग में श्री धर्मदेव भक्तिदेवी के द्वारा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में सोलह वर्ष की उम्र में चार स्वरुप में प्रगट हुए । हरि, कृष्ण, नर, नारायण उसमें हरि और कृष्ण स्वरुप ब्रह्मपुर धाम के मुक्तो ने धारण करके निवास किये थे । और नर स्वरुप में केदारनाथ धाम में अनार के वृक्ष के नीचे बैठ कर कठोर तपस्या कर रहे है । और बद्रीनाथधाम में (बद्रिकाश्रम) में बेर के वृक्ष के नीचे नारायण प्रभु तपस्या करते है । तथा नारायण भगवान की आज्ञा से गंगाजी और अलकनंदा के संगम स्थल देव प्रयाग तीर्थ में धर्मदेव भक्तिमाता निवास करती है ।

श्री नरनारायण अवतार का लाखो वर्ष का इतिहास दे गये । फिर भी भारत में कही भी नरनारायण की मूर्ति को किसी भी धर्म सम्प्रदाय को उपर लिखीत चारो में से एक भी नरनारायण की प्रतिमा स्थापित करने का विचार नहीं किये । जब कि नरनारायण ने कठोर तपस्या करके भरत खंड के भक्तो को कल्याण का फल दिये । तथा भरत खंड के अधिष्ठाता देव रुप में भगवान वेद व्यास के कहने के पश्चात भी पहले के किसी आचार्य ने श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा की प्रतिष्ठित नहीं किये । तभी सर्वावतारी श्रीजी महाराज ब्रह्मांड में सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की मूर्ति की प्रतिष्ठित करके स्वयं के भगवान को पूजने, सेवा और दर्शन का अवसर दिये ।

तथा वे सर्व प्रथम मंदिर में भरत खंड को पुत्र रुप में भगवान देने वाले माता-पिता धर्मपिता भक्तिमाता की मूर्तियो को अपने हरिकृष्ण स्वरुप के साथ प्राण प्रतिष्ठा करके तथा उद्धव संप्रदाय की रामानुज के विशिष्टाद्वेष सिद्धान्त के मतानुसार गुरु मंत्र की सिद्धि के लिए राधिका सहित श्रीकृष्ण स्वरुप की प्राण प्रतिष्ठा किये । इसके बाद एकबार श्रीहरि अहमदाबाद आये और श्री नरनारायणदेव देव के सानिध्य में भव्य रंगोत्सव किये । उस समय हिराजी नाम का जयपुर का एक पत्थरकट्ट सोमपुरा थे । वे वडोदरा में रहते थे । ये सत्संगीयो से हमेशा जुडे रहते थे । इस कारण से निष्ठावान हरि भक्त हो गये थे । उसका मंदिर में सेवा करने का अति उत्साह था । श्रीहरि का जहाँ पर भी मंदिर

बने वहाँ पर पत्थर के कार्य में भाग लेते थे। मूर्ति बनाने का कुशल गुण उनमें था। जैसी कल्पना करके कहा जाता था। वैसे ही अद्‌भूत मूर्ति बना कर दे देते थे।

श्रीहरि ने अहमदाबाद में हिराजी सोमपुरा को अपने पास बुलाये। उनके कला की प्रसंशा किये। तथा अपनी बात को आगे रखो, कहे कि जैसे हम कहे वैसा ही महावीर हनुमानजी की एक मूर्ति और एक गणपति की मूर्ति बनाकर दे। हम जैसा कहे वैसी ही मूर्ति बनाये जो बात कहे दिल में धारण करे। इस तरह श्रीहरि मूर्ति बनाने के लिये कहे। तब हिराजी सोमपुरा बोले मुझे कागज पर चित्र बनाकर मुझे दे। उस चित्र को देखकर वैसी ही मूर्ति बनाऊ।

तत्पश्चात श्रीहरिने आधारानंद स्वामी को बुलाकर बोले कि, कागज लाईये, जैसा हम बताये उसमें हनुमानजी की मूर्ति बनाइये। आधारनंद स्वामी कागज लाये, उसी समय श्रीहरि पाट उपर खडे होकर हनुमानजी की जो महावीर मुद्रा का दर्शन कराये। उसी अनुसार आधारनंद स्वामीजीने क्षणभर में महावीर मुद्रा की हनुमानजी को कागज पर बना दिया। यह देखकर श्रीहरि खुश हुए। संत और हरिभक्त भी श्रीहरि की ऐसी लीला देखकर खुब खुश हुए। उस कागज को श्रीहरि हिराणी सोमपुरा को दिये। सुंदर महावीर स्वरुप को हृदय में धारण करके हिराजी सोमपुरा बड़े पत्थर में से हनुमानजी की मूर्ति बनाने लगे। महावीर की मूर्ति तो कागज पर बनाई गई थी। लेकिन हिराजी के हृदय में श्रीहरि पाट के उपर खड़े हुए महावीर मुद्रा का स्वरुप हृदय में अखण्ड दिखाई देने लगा। अथार्त मूर्ति को बनाते बनाते हुए हिराजी को कागज पर बनाये गये आधारानंद रचित चित्र को बिना देखे ही श्रीहरि की मुद्रा देखकर दिव्य मूर्ति बनाडाले। यह ऐसे की सामने देखने पर भक्त को शांति भी मिले तथा अभक्त को भ्रम हो जाये।

हिराजी सोमपुरा जब बना रहे थे तब श्रीहरि के पास जाकर बैठते, और अमृत बचनो से हिराजी की प्रशंसा करते थे। मात्र एक महीने में ही महावीरजी की मूर्ति तैयार हो गयी। उस विशालकाय रुद्रावतार महावीर स्वरुप को श्री नरनारायणदेव मंदिर के सामने दक्षिणामुखी हनुमानजी और उत्तरमुखी गणपति की स्थापना स्वयं श्रीहरि अपने हाथ से पूजा आरती किये।

भक्तो जब जब महावीर हनुमानजी का दर्शन करे तब श्रीहरि महावीर मुद्रा में खडो हो ऐसा दर्शन होता है।

श्रीहरि जब जब अहमदाबाद आते थे तब-तब श्री नरनारायणदेव के सामने एक नजर से मूर्ति को देखते थे तथा महावीर हनुमानजी के सामने खड़े रहते थे।

समस्त सत्संगियो को सूचना

श्री नरनारायणदेव देश के सभी श्री स्वामिनारायण मंदिरो के कोठारीश्री, कार्यकारिणी कमेटी के सभी सदस्य प्रतिनिधि और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आदि सभी को विशेष सूचना है - अनुरोध है कि (हमारे भाइयो बहनो के मंदिर में) अपने अहमदाबाद, मूली, भूज-कच्छ देश के संत सिवाय अन्य कोई (देव की संस्था के साथ न जुडी हो) प्राईवेट संस्था रखने वाले हरिभक्त संत की अग्रणी को हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की लिखित आज्ञा के विना कोई प्रवृत्ति अपने मंदिर में नही करने दे। (जिससे कथा, वार्ता सभा आदि) गाँव कि हरिभक्तो के बच्चे जिस भी संस्था में पढते हो उन्हें भी सूचना है कि अपने मंदिर में सभा के लिए मना करे। उपरोक्त सूचना प्रत्येक गाँव के हरिभ्कतो को विशेष ध्यान देना है।

अत्यधिक करुणा किये है

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

अष्टपदी

तरुणं लोकयचातिकरुणं कृष्णं पथि हे सखी मम् रज्जनम् ॥ तरुणं....१
आवयमानं कलरवगानं विधुमुखबालानन्दनम् ॥ तरुणं....२
बपुषि नीले गजगतिलीले दधतं तु केसरचंदनम् ॥ तरुणं....३
चेतो हरन्तं सखि विहरन्तं कुसुमहारमीशमण्डनम् ॥ तरुणं....४
चंञ्चलदृष्टिं कृतलोकसृष्टिं अजितमदनमदगञ्जनम् ॥ तरुणं....५
सुमनोऽनुकूलं मंगलमूलं कुपथदेशिकमतखण्डनम् ॥ तरुणं....६
धृतसितवसनं मुखमितहसनं विधिभवदेवकृतवन्दनम् ॥ तरुणं....७
उपचितसेवं कविवासुदेवं तं पाति कलिकालकम्पनम् ॥ तरुणं....८
॥ इति श्रीवासुदेवानन्दवर्णिरचिताऽष्टपदी सम्पूर्णा ॥

भगवान श्री स्वामिनारायण के महान परमहंसो में जो भगवदनिष्ठा सर्वोपरि उपासना जो सर्वोत्कृष्ट भी है । उन परम हंसो में सबसेप हले नाम वर्णिराज श्री वासुदेवानंद को माना जाता है । क्योंकि उनेक द्वारा रचित ग्रन्थो में उनका प्रत्यक्ष दर्शन होता है । श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रन्थ में परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारयण की उपासना भक्ति और शरणागति से जीवात्मा को मोक्ष अर्थात् अक्षरधाम की प्राप्ति होती है । यह स्पष्ट रुप से प्रतिपादित किया गया है । उसी प्रकार उनके द्वारा रचित स्त्रोतो में भी सवर्त केवल भगवान श्री स्वामिनारायण और उनका क्या सखा भाव है उसका सुंदर वर्णन है । उनके शब्दो पर विचार करे ।

तरुणं लोकयचातिकरुणं कृष्णं पथि हे सखी मम् रज्जनम् ॥ तरुणं....१

वर्णिराज श्री वासुदेवनंद स्वामी भगवान श्री स्वामिनारायण स्वभाविक स्वभाव की बात करते है । स्वयं के साथ विचरण करने वाले और वे ही भगवान श्री स्वामिनारायण के अनन्य एकान्तिक परम भक्त ऐसे पाँच सो परमहंसो में से कोई एक वे ब्रह्मानंद स्वामी या महानुभावानंद स्वामी कोई भी हो सकते है । जो परमात्मा की सखा भाव से भक्ति करते है । उन्हें कहते है कि देखो मेरे सखा अर्थात् भगवान श्रीहरि सहजानंद स्वामी कितने सुंदर रुपवान लोगो में दर्शन दे रहे है और उनका हृदय भक्तो के उपर करुणामय है । जिससे दर्शनक रे वाले के चित्त को अपनी तरफ खींच लेती है । दूर-दूर को यात्रा करके यहाँ पर दर्शन के लिये आते है । रास्ते में चलकर आने से थकावट प्रभु श्री कृष्ण पुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी को देखकर परमानंद में बदल जाता है । और मेरे हृदय में अति आनंद हो जाता है ।(१)

आवयमानं कलरवगानं विधुमुखबालानन्दनम् ॥ तरुणं....२

जिस प्रदेश के नगर में बडे-बडे समैया उत्सव और जन्माष्टमी आदि होती है । तब लोग सभी संतो को दर्श; करने के लिए बुलाते है । तभी संतो के मंडल आने लगते है उनके दूर से आने वाली आवाज की कलरव सुनकर शीघ्रातिशीघ्र दर्शन करने का मन हो जाता है । तब श्रीहरि माता भक्ति देवी वालादेवी के पुर के पूर्णिमा के समान प्रफुल्लिति कमलवत मुख को देखकर दूर-दूर से आने वाले दर्शनर्थी रास्ते में थकावट हो जाने से जब वे प्रभु श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी की करुणामयी रुप देखकर खुश हो जाते है और हमारा हृदय अति आनंद से लहरित हो जाता है ।(२)

बपुषि नीले गजगतिलीले दधतं तु केसरचंदनम् ॥ तरुणं....३

मनुष्य शरीर धारण किये है । ऐसे परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि अषाढ़ महीने के बादल, आकश जैसे श्याम सुंदर शरीर को धारण किये है । ऐसी दिव्य शरीर ऐसा लगता है कि सामने से कोई बड़ा मदमस्त हाथी चलकर आ रहा हो । भव्य चाल से आते श्रीहरि के विशाल भाल (मस्तक) प्रदेश में सुंदर सुशोभित केसर और चंदन से सुगन्धित खडा पुंड तीलक और गोल बिन्दी धारण किये । ऐसा

दर्शन हो जाने से दूर-दूर देशान्तर में विचरण करते यहा दर्शन हेतु पधारने की थकावट प्रभु श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी की करुणामयी रुप देखकर खुश हो जाते है और हमारा हृदय अति आनंद से लहरित हो जाता है।(३)

चेतो हरन्तं सखि विहरन्तं कुसुमहारमीशमण्डनम् ॥ तरुणं....४

हे सखी देखो तो प्रभु इस गाँव से उस गाँव इस भक्त से उस भक्त तक विचरण करते हुए। दर्शन देते हुए मेरे तथा समस्त दर्शनार्थी भक्तो के चित्त को अपने दिव्य और सुशोभित पुष्पो से ढके स्वरुप में बीच लेते है। दूर-दूर से दर्शन हेतु यहाँ पर आते है तथा रास्ते की थकावट उस प्रभु श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी की करुणामयी रुप देखकर खुश हो जाते है और हमारा हृदय अति आनंद से लहरित हो जाता है।(४)

चंञ्चलदृष्टिं कृतलोकसृष्टिं अजितमदनमदगञ्जनम् ॥ तरुणं....५

इस श्रीहरि की दृष्टि अति चपल और चंचल है। यह प्रभु की नजर पडते ही चौदह लोक सहित सभी ब्रह्मांडो की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय होती है। यह मात्र केवल उनकी दृष्टि की शक्ति ही है। संसार में सभी को पराजित करने वाले, कोई जीत न सके ऐसे साक्षात् कामदेव के गर्व को नाश करने वाले ऐसा तो उनका रुप है। दूर-दूर से यात्रा करके यहाँ पर दर्शन हेतु आते है रास्ते के सभी कष्ट आपके प्रभु श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी की करुणामयी रुप देखकर खुश हो जाते है और हमारा हृदय अति आनंद से लहरित हो जाता है।(५)

सुमनोऽनुकूलं मंगलमूलं कुपथदेशिकमतखण्डनम् ॥ तरुणं....६

श्रीहरि के कंठ से अमृत जैसे शब्द मनुष्य को तत्काल अच्छे लगते है। अर्थात् सबको प्रिय लगता है। उनके वचन को मानकर पालन करते है और आश्रित बनते है। वे सभी जीवो का सदैव सर्व सभी प्रकार से मंगल करते है। तथा मोक्ष की प्राप्ति कराते है। मोक्ष के विपरीत निर्दोष भोले लोगो को भरमाकर कृपया पर ले जाने वाले दुष्ट बुद्धि वालो के मत का खंडन करके सत्य सनातन जो परमात्मा की भक्ति रुप मार्ग पर जीवो को लाते है। दूर-दूर से चलकर दर्शन हेतु आने पर शरीर की थकान प्रभु श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी की करुणामयी रुप देखकर खुश हो जाते है और हमारा हृदय अति आनंद से लहरित हो जाता है।(६)

धृतसितवसनं मुखमितहसनं विधिभवदेवकृतवन्दनम् ॥ तरुणं....७

इस पृथ्वी पर भयानक कलियुग में अवतार लेकर मनुष्य चरित्र में प्रभु हमेशा सुंदर श्वेत सादा सफेद वस्त्र अपने अँग के उपर धारण किये है। जो जीवो को शीतलता, सुख शांति देती है। और आप के कलमवत मुख मंडल पर सदैव मंद-मंद हास्य के साथ आनंद दे रहा है जिससे जीवो के हृदय में से शोक चिंता और दुख दूर हो जाता है इस कारण से बड़े बड़े देव साक्षात् ब्रह्मा, शिव और इन्द्र आप के श्री चरणो में हाथ जोडकर वंदन करते है। प्रणाम करते है। दूर-दूर से दर्शन हेतु आने पर लगी थकान प्रभु श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी की करुणामयी रुप देखकर खुश हो जाते है और हमारा हृदय अति आनंद से लहरित हो जाता है।(७)

उपचितसेवं कविवासुदेवं तं पाति कलिकालकम्पनम् ॥ तरुणं....८

उस भगवान श्रीहरि सहजानंद स्वामी श्री स्वामिनारायण महाप्रभु का सेवक में कवि वासुदेवानंद वर्णी उनकी कृपा से श्रीहरि की अंगत सेवा जैसे प्रातः काल में नित्य कर्म पूजा के उपकरण वर्तन, वस्त्र को धोना तथा स्वच्छ रखने की सेवा का अवसर मिला है। इस कारण से मेरे हृदय में से कलियुग में धार्मिक जीव के हृदय को कपा देने वाले अंतःशत्रुओ काम, क्रोध, लोभ आदि नष्ट हो गया है। और अन्तःकरण निर्मल हो गया है। इस कारण से प्रभु का वास हुआ है दूर-दूर से विचरण करके यहाँ पर आने से होने वाली थकान प्रभु श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंद स्वामी की करुणामयी रुप देखकर खुश हो जाते है और हमारा हृदय अति आनंद से लहरित हो जाता है।(८)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन

'स्वरुप अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

परमपूज्य महाराजश्री के ४६ वे जन्म उत्सव के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर (विजया दशमी-२०१८) : उपस्थित सभी संत हरिभक्तो ने धन्यवाद दिये प.पू. महाराजश्रीने कहा कि संतो के साथ सदैव हमारा लगाव रहा है। तथा सदैव रहना भी है। हरिभक्तो के साथ भी यहीं भावना रही है। समय बचाकर आना कठिन कार्य है। भुज से संत आये है। सांख्ययोगी बहने भी अधिक संख्या में आयी है। ऐसा समाचार मिला है। हमारी आन्तरिक भावना है कि नरनारायणदेव का पाटोत्सव हो तो ऐसी व्यवस्था हो। नरनारायण है तो हम लोग है। अभी आरती लेने गये किसी भाईने कहा आशीर्वाद दीजियेगा। तो हमने कहा कहाँ से लाये ? सामने देव है उनके कृपा से हम आप सीधे ही आर्शीवाद माँग लो। सरल बात नही है। किसी को ऐसे मिलता है। हमें तो मिला है। भुज से जो संत आये है तो आप सभी पाटोत्सव में आइयेगा। हम भुज ४० बार आये है। महाराजने त्याग करके मंदिरो का निर्माण किये। सर्व प्रथम और नींव का प्रथम मंदिर तो अपना अहमदाबाद का मंदिर है। सांख्ययोगी बहने, वाडासर और मांडवी से आये सभी से धन्यवाद के साथ इतनी विनती है कि संकल्प करे तो देव के लिये करो हम तो आज है कल नही। देव तो स्थाययी रहने वाले है। यह प्रथम बिन्दु बोले है लिखकर रखे। देव का पाटोत्सव, शिखरबध्ध मंदिर हो वहाँ के देव के पाटोत्सव की तारीख में मैं कभी छोडता नहीं हूँ। कोई लिखे या न लिखे हम पहुंच ही जाते है।

आज एक विशेष दिन है। हमारा जन्मोत्सव या दशहरा के कारम नही, मंदिर के बगल में अनाथाश्रम बन रहा है ईस कारण से आया हूँ। यह समाज के लिये अच्छी बात नही है कि इस लिये इसे उद्घाटन नही कहूँगा। माता-पिता, दादा-दागी को वृद्धाश्रम में रखे तथा वृद्धाक्षम का उद्घाटन शब्द प्रयोग करे यह समाज में अपमान स्वरुप है। समय हो तो "आँगन" में चक्कर लगाये। टी.वी. में भी कही आ रहा होगा। कही पर माँगा नही। आप मंदिर में १ रुपये से लेकर लाख रुपये देते है। उसी पैसे का उपयोग समाज में उपयोगी तथा मंदिरो में करते है। कोई आग्रह करके देना चाहता है तो उनको कारोबारी से रसीद दिला देते है। १० वर्ष पहले गादीवालेने संकल्प किया था। डेढ घंटे के बच्चे को कोई डस्टबिन में डालकर चला जाय तो ऐसा लगता है कि उस बच्चे ने क्या पाप किया है। उसका क्या अपराध है। अपने संस्था के पास ह्यूमन, आर्थिक, प्रशासनिक इत्यादि तमाम क्षमता होने के कारण घर से प्रारम्भ करे ऐसे संकल्प थे। महाराज उस समय अन्नक्षेत्र चालू किये। कुआँ और पोखरे बनाये यह मानवता के कार्य है यह जानकारी हेतु है। कुछ नया नही किये। आंगन के लिए फ्रीज, कुलर, टेबल, इत्यादि वस्तुए लोग सामने से आकर हवेली में सांख्ययोगी बहनो के द्वारा दे जाते है। अभी कुछ दिन पूर्व हम बलदिया कच्छ में थे। तभी एक भाई २५ लाख का चेक लेकर आये और हमने कहा मैं यह नही स्वीकारता क्योकि यह देव का है ये आप का ही है और आप का ही हम खाते है।

आँगन में जो मूर्ति स्थापित है उसकी आरती गादीवाल तथा श्रीराजा बहनो के साथ करेगे। बीते हुई

दिन में तीन बजे तक आंगन को पूर्ण करने के लिये जिन लोगोने मेहनत किया है उन सभी को धन्यवाद मानवता जीवित रखने के लिए ये समप्रदाय है। केवल दिवाल के सामने बैठकर माला फेरने के लिए ये सम्प्रदाय नहि है। यह महाराज का सिद्धान्त है । १० करोड वाले इस प्रोजेक्ट की पूर्णता के लिये ९९.९८% दान मिला है। इसका भूगतान अपने मंदिर के कोठार द्वारा किया गया है। ये तो केवल वार्षिक प्रगति दे रहा हूँ कि अपने मंदिर द्वारा क्या-क्या होता है। अभी कार्यालय में बैठा था। आँगन प्रोजेक्ट को पूर्ण करने की जिम्मेदारी करशनभाई राधवाणी को दी है। उनसे पूछे कि आप के द्वारा कितने प्रोजेक्ट आप के हाथ से ड्रोईंग हुए है। तब वे बोले, १० प्रोजेक्ट का मुझे ज्ञान है। दूसरा सत्य यहा है कि दूसरे ५० प्रोजेक्ट सीधे कालुपुर मंदिर के नियन्त्रण में निर्माणाधीन है। यह आप के पैसे से ही हो रहा है ? माँगने के लिये नही कर रहा हूँ। लेकिन हमें गर्व है कि देव के अर्थ हेतु हो रहा है। मोटा बापजी ने संस्कार दिया है कि देव के लिये जो हो उसमें कमी न करो। मैं सीख कर तो नहीं आया था। यह संस्कार वारसागत प्राप्त हुआ है । वारसा लेकर ही मेरा जन्म हुआ है। देव के लिए आधी रात में बैठा हूँ। और संत भी बैटे है। और आप की मुझे सूचना भी है। यह अपना परिवार हे। शेष देव के अलावा जो हो रहा है उसमें मेरा रस नही है।

अब बात कर रहा हूँ। अपनी परम्परा और धरोहर को सुरक्षित करना। अपने मंदिर के सभा मंडप के स्तम्भ पर का नक्शी कार्य आप देख रहे है। उस पर ४०० पेज की सरकार ने पुस्तक लिखी है। वर्ल्ड हेरिटेज में अहमदाबाद का नाम है । और इस हेरिटेज की बात अपने कालुपु रमंदिर से शुरु होती है। जिसका आप शभी को ज्ञान है। धरोहर बचना अपना कार्य है। मोटा बापूने म्युजियम का संकल्प बनवाये तो सुरक्षा अपना कार्य है न ? यदी नही करते तो सुरक्षित रहता ? ये पुस्तक मिलती ? कौन सी पुस्तके ? नंद संतो द्वारा लिखी मूल प्रतितिखि । अभी रास्ते में ही मोटा बापजी बात किये कि आने वाले वर्ष में सरस्वती का पूजन म्युजियम में किया जाय। जिस में स्टेज पर शिक्षापत्री को सर्व प्रथम रख कर नंद संतो रचित प्राचीन प्रति-पूजन आरती की जाये । क्योकि महाराज ने कहा है मेरी वाणी ही मेरा स्वरुप है। आप सभी वहाँ आयेगे ये मुझे विश्वास है। हमारी ट्रेडिशन विरासत सुरक्षित रखना महत्वपूर्ण है । घनश्याम महाराज का दर्शनक रके अपने कच्छी कीर्तन मंडल के साथ खडा हूँ। अपनी ये कुछ परम्पराये भूल न जाये उसे बचाना पडता है। प्रान्तीय परम्पार ये कच्छ की हो, उत्तर गुजरात, सांबरकांठा, पंचमहल, झालावाड या कोई अन्य क्षेत्र का उसे सुरक्षित रखना अपना काम है । आपसी सहयोग के बिना कुछ नही हो सकता है। उत्सव समैया में ये हमारी विरासत विशेष रुप से दिखायी देती है ।

ऐसी ही एक बात हमने प्राचीन खिडकी दरवाजो टेडिशनल वस्तुओ की है। इसका कागज भेजा गया है। पत्र हमारे पास आ गये है। इसकी जानकारी कोठार में करा दे। १०० वर्ष के आस-पास खिडकी दरवाजो को आप भंगार में देना चाहते है तो हमशे अवश्य बताये। यदि आप कहेगे तो धन भी देगे और ले लेगे । इसका उपयोग करके अच्छा कार्य करना है। मिट्टी की पुताई पर चलना अच्छाल गता है। नलिया वाले घर में खटिया पर सोना मजेदार लगता है। ऐसी ए.सी. वाले कमरे से आता है। ए.सी. में से उठने पर तकलीफ हो जाती है। परम्परा हरिभक्त यहा पर आये है।

कार्यक्रम पूर्ण हो जाने के बाद बहने सर्वप्रथम

'आंगन' में जायेगे । हमारा अवसर बाद में है । मैं विचार करता हूँ कि कुछ लोग मात्र नारी शक्तिकी बाते करते है । जब हम लोगने नारी क्या कर सकती है । सच्चे अर्थ में बता दिये है । मैं वहाँ नही जाने वाला हूँ । आज तक गया भी नही हूं । गादीवाला देख-रेख रखने वाले है । उनके सात बहनो की टीम है । स्त्री शक्ति का एक अभिगमन है । अनपे बेटी-बहनो को भी इस कार्य में जूडने के लिये प्रेरणा दे । भगवान खुश है । कथा वार्ता से अच्छे गुण आते है । लेकिन सत्संग के द्वारा और अच्छे गुण आते है । ये प्रोजेक्ट आप के द्वारा ही है । आप के लिये है । विशेषकर कच्छ के हरिभक्त चारो तरफ सेवा करते है । लेकिन फिल्टर करके सेवा करना । सच्चे से विचार कर कहाँ जाना है या नही जाना है । जाना चाहिए । लोग हमारे मंदिरो के नाम से ले जाते है । आप को रसीद भी देगे । आप के नाम की थैली भी दिखा सकते है । नरनारायणदेव या राधाकृष्णदेव कानाम भी हो लेकिन वह देव का खाता नहीं भी हो । इसके चेक करे कि रसीद मान्य है कि नही है ?

यह हम सबका परिवार है । और अपने बाप सामने बैठे है । नरनारायणदेव । २०० वाँ पाटोत्सव की तैयारी हो इससे पहले कई प्रोजेक्ट होते रहगे । यह भगवान करते और कराते है । लालजी महाराजश्री ने कहा कि हम अपनी शक्ति अनुसार सहयोग देगे । मात्र सहयोग किस लिये ? जो कार्य में शुरु करता हूँ वह छोड देता हूँ आगे आप को ले जाना है । आप का है आप को करना है । यह विरासत प्रत्येक बच्चे-बच्चे को देना है । हमे तो मोटा बापनी ने संस्कार दिया है इसी लिये कोई प्रतिष्ठा की तारीख लेने आता है तो तुरंत कहता हूँ कि दस्तावजे लाईयेगा । तब मैं खराब लगता हूँ । लेकिन सत्य यह है कि देव के दस्तावेज विना हमे कोई रसनही है और आप को भी बता रहा हूँ कि देव के दस्तावेज बिना १ रुपिया भी न दे । हमारे प्रत्येक गाँव में प्राचीन परम्परा रही है कि मंदिर बना चाहे वो खाखरिया, उत्तर गुजरात, झालावाड या चोरासी गाँव यह किसके नीयन्त्रण में है ? कौन मालिक ? कोई कागज क्लीयर नही तो बाद में क्या ? मानलीजीए दूसरे समूह की बहुमति हो जाये । पहले की मूर्ति बाहर रख दे, बाद में अंदर-अंदर सिंहासन पर आजाये तो आप क्या करेगे ? आप जब तक हे तब तक भी हो । आप के पीढी के बाद भी न हो, बाद बाली पीठी की जिम्मेदारी कौन लेगा ? भविष्य की सुरक्षा के लिये आप से सजग रहना पडेगा । हम इस लिये दस्तावेज और विलीनी करण का आग्रह रखते है । अभी तीन मंदिरो का चेरिटी आयुक्त द्वारा विलीनीकरण किया गाय है । हमारा तो कार्य बढ गया । प्रत्येक मंदिर का रिटर्न फाईल करना प्रशासनिक कार्य बढ जाता है । फिर भी संस्था की सुरक्षा के लिये यह कार्य करते है । ८०% को यह ज्ञात है । इसलिये प्रत्येक गाँव के मंदिर का

नीचे के महामंदिरो में नित्य दर्शन के लीये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
छपिया : www.chhapaiya.com
नारणघाट : www.narayanghat.com
प्रयाग : www.prayagmilan.org
ईडर : www.gopinathjiidar.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
टोरडा : www.swaminarayanmandirtorda.com
वडनगर : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
अयोध्या : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
नारणपुरा : www.sankalpmurti.org
धोलका : www.swaminarayanmandirdholka.co.in

७/१२ की नकल, पंचायत में या गाँव की आफिस में हो क्लीयर होना चाहिए । यह महत्व पूर्ण विषय है । यदि क्लीयर नही है तो जिम्मेदारी कैसे लगे ।

कई लोग आज कल मंदिर, प्रसाद की जगह, खेत इत्यादि बेचने का व्यवसाय शुरु किये है । और बाद में कहते है आप मंदिर बेचने निकले है । ऐसा कोई मिले तो सर्व प्रथम कागज मागियेगा हम खरीद लेगे । इसलिये सबसे आग्रह है कि किसी की बात में न आये । कहीं पर ऐसा ज्ञात हो तो अपने विस्तार के संत को बताये, कोठार में सूचना दे, मुझे बताये कही पर तो हम मिलेगे । आप को बता देगे यह अपना है कि नही. क्या कर सकते है ? सही सिक्का करना अति सरल है ? यह इस लिये बता रहे है कि प्रसादी की जगह हो या मंदिर की यदि बच जाये तो पैसा मूल्यवान नही है लेकिन जगह की कीमती है । मुझे ज्ञात है कि आप के माता-पिता बुर्जुगो ने पेट काटकर खून पसीना एक करके मंदिर बनाये है । यह कोई गैर जिम्मेदार व्यक्ति न ले सके यह देखना हमारा कार्य है ? इस लिये ध्यान दे । आप को लगे तो हमे बताये । हम सभा या कथा में समय न भीदे । लेकिन इस कार्य में ११०% समय देने की तैयारी है ।

इस तरह संतो में पीछे वासुदेव स्वामी फुल साइज में बैठे है । तथा इस तरह हरिभक्त खडे होकर तप कर रहे है . एक गाँव में सभा संचालक के पीछे खडा भक्तो को कहते है सभी सभा मंडप में बैठ जाइये । हम बोले खडे ही सही आये तो है न ! आप की बात नही । आप तो हमेशा आते है । रेलिंग सजाइये १२५ वर्ष हो गये गिरा भी नही गिरने भी नही देगे । अभी १००० वर्ष तक गिरे नही ऐसा है । नरनारायणदेव की गद्दी में कुछ नहीं होगा । ये देव-चार हाथ वाले नही आठ हाथ वाले है । महाराज और इस नरनारायणदेव में लेश मात्र बदलाव नही । मेरा जन्म दिन नही लेकिन हम सब मिले ये आनन्द की बात है । नरनारायणदेव के लिये कार्य हो रहा है । बड़े युवको को मार्ग दर्शन दे रहे है । हट जाना नही, लेकिन राहत करने पर भविष्य की पीठी बनती है । आप सभी को महाराज की सेवा के लिये खूब बल मिले ? शक्ति मिले, खुश रहे, हंसते रहे । ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करता हूँ ।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री आर्शीवचन में उपस्थित सभी को धन्यवाद किये । मेरे पिता का स्वास्थ्य ठीक है, और अच्छा रहे । स्वयं स्वयं की शक्ति द्वारा देश-विदेश में पिता द्वारा शुरु किये गये विचारो में सहायक बनू उसके लिये नरनारायणदेव की प्रार्थना करके विशेष में बोले थे । गादीवालाकी इच्छा थी कि पिछेल पाँच वर्षो से जो बहने गाँव में सभा करती है उसका प्रचार हो । इन बहनो की बात करे तो हमारे अलग-अगल जगहो पर जैसे कि गांधीनगर, बापूनगर, निकोल, नरोडा, मेघाणीनगर, कांकरिया, साबरमती, वस्त्रापुर, जीवराजपार्क, बालवा, दरियापुर, मोटेरा, गोमतीपुर, घाटोलडीया इत्यादि जगहो पर बहने महीने में दो बार सभा करती है । गाँवो मे तथा अन्य जगहो पर जाकर एक वर्ष में २०० सभा की है । गादीवाला भी सभा में रहती है । ये बहने अपने खर्चे से गाडी में बैठकर सभा में जाती है । सभा में संख्या कमहोने पर भी नियमति सभा करते है । इन बहनो का खूब धन्यवाद तथा उनके परिवार का सहयोग भी धन्यवाद के काबिल है । हमने तालियो से स्वागत करे तथा हवेली में उन बहनो को गादीवाला की तरफ से स्वयं के हाथो द्वारा आशीर्वाद पत्र अभिनन्दन स्वरुप में देकर प्रोत्साहित किये थे ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अक्षरब्रह्मांड के नाथ ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण जब भोजन करने बैठते थे। तब का वर्णन करते हुए स.गु. प्रेमानंद स्वामी लिखते है कि –

माथे उपरणी रे ओढी बेसे जमवा, कान उघाडा रे रारवे मुजने गमवा
जमता डाबा रे पग पलांठी वाली, ते पर डाबो रे करमेले वनमाली
जमणा पग ने रारवी उभो श्याम, ते पर जमणो रे करमेले सुरवधाम
रुडी रीते रे, जमे देवना देव, बारे बारे रे पाणी पीधानी टेव

श्रीहरि तो भाव के भूखे है भोजन के नही, वर्णी स्वरुप में पूर्ण उपवास करते थे। कई बार मात्र मीठी आवल का लड्डू खाते थे। छोटे हरिभक्तो के घर पत्ते पर भी खाते थे। तथा राजा-महाराजा के यहाँ सोने की थाली में भी खाते थे। मूर्ति द्वार पर थाल भोग लगाते थे। और व्रत उपवास से देह की शुद्धि भी करते थे। जीवन भगत के मठ के रोटी को भी खाते तथा दादा खाचर के घर जीवुबा लाडूबा अन्नकूट भी खाते थे। कभी स्वयं बनाकर तो कभी मूलजी ब्रह्मचारी के पास से थाल बनवाते थे। कभी अयोध्यावासी के घर खाते तो कभी गंगामाँ के घर खाते थे। .... लेकिन हर बार हरिभक्त के भाव का पान करते थे।

जिस पात्र में त्रिभुवन के मालिक खाते हो। उसका दर्शन सामान्य पुण्य से नही मिल सकता है। जिसके मात्र भोजन करने से ब्रह्मांड के अनन्त जीवो का पोषण होता है। ऐसे श्रीहरि के भोजन के पात्र का दर्शन करने से सुन्दर धन्यता प्राप्त होती है।

इस छोटी थाली कटोरी में ही हरिभक्त हृदय के भाव को मिलाकर खिलाते। इस पात्र में यह गुण है न। श्रीहरि की सेवा आ जाते थे। इस थाली और कटोरी में श्रीहरि स्वयं भोजन किये है। इसके दर्शन के आगे ही श्रीहरि की भोजन करने की छबि उभर आती है। यह मात्र थाली कटोरी नही है। समस्त ब्रह्मांड को ऊर्जा करने वाले अन्नदेव का आश्रय स्थल है।

ताँबा के धातु की मायिक थाली कटोरी का दर्शन अपने स्वामिनारायण म्यूजियम में हाल नं. ६ में है। सभी हरिभक्त प्रेम और श्रद्धा से इनका दर्शन करें। तो मायावी जगत की विषयो की भूख समाप्त हो जायेगी।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि

अक्टूबर-२०१८

रु.१,००,०००/-	महेश प्राणलाल परीख - ह. जगदीशभाई शाह(सेमिट्रोनिक) मणीनगर - अहमदाबाद
रु.५,००१/-	अ.नि. जसवंतलाल अमुलखभाई दोशी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि के अवसर पर - ह. जयेश दोशी - नारणपुरा
रु.५,००१/-	पटेल नटवरभाई परसोतमभाई - विसतपुरा
रु.५,००१/-	बाबुभाई शंकरदास पटेल - बेटी के घर भानजे के जन्म दिनपर - न्यु राणीप
रु.५,००१/-	मीनाबेन के. जोशी - बोपल-अहमदाबाद
रु.५,००१/-	विरल कनुभाई पटेल वृंदा के जन्म दिन के अवसर पर - नवा वाडज

नवम्बर-२०१८

रु.१०,०००/-	हिराणी वनिताबेन मनजी (कच्छ)
रु.५,१५१/-	गीताबेन बलदेवभाई सुहागिया - कर्म शक्ति
रु.५,०००/-	मीनाबेन के. जोशी - बोपल-अहमदाबाद
रु.५,०००/-	कोकिलाबेन विपिनचंद्र - वस्त्राल-अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि

अक्टूबरबर-२०१८

दि. २१-१०-२०१८	ईश्वरभाई त्रिभुवनदास पटेल ० पौत्र व्योमेश के जन्म दिन पर - माणसावाले - सायन्ससीटी

नवम्बर-२०१८

दि. ०३-११-२०१८	डॉ. दिनेशभाई सवजीभाई परमार - जामसर
दि. ०५-११-२०१८	प.पू. बड़े महाराज के शुभ हाथो द्वारा श्री लक्ष्मीपूजन - ह. अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट परिवार - अहमदाबाद
दि. ०६-११-२०१८	श्री हनुमानजी समूह पूजन काली चौदस पर
दि. १०-११-२०१८	नवीनचंद्र मणीलाल पटेल - मेमनगर
दि. १२-११-२०१८	अ.नि. जटाशंकरभाई पोपटलाल शाह परिवार (सेमीट्रोनिक) अहमदाबाद
दि. १५-११-२०१८	अ.नि. वर्षाबेन नवीनचंद्र पाठक - यु.के.
दि. १७-११-२०१८	खेर शांताबेन नारणभाई - ह. खेर दिनेशभाई दिपुभाई - बलोल-भाल
दि.१८-११-२०१८	(प्रातः) मुकेशभाई मावजीभाई ठक्कर - घोडासर (शायं) डॉ. जिग्नेश शाह फेमिली - टेक्सास
दि. २५-११-२०१८	अ.नि. मणीबेन धरमशीभाई काचा, अ.नि. धरमशीभाई जीवाभाई काचा - ह. प्रागजीभाई, धरमशीभाई काचा - जामसर

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

उत्तरायण के पुण्य (झोली) पर्व

नाम : .....

पता : .....

फोन नं. : .....मो. : .....

उत्तरायण पुण्य पर्व

पपू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने ४५ वें जन्मोत्सव के अवसर पर 'आंगन' की स्थापना की उदघोषणा की। इसीलीए अब नरनारायणदेव देश के सभी शहर और गाँवो के कोठारीश्री और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रतिनिधीयो से यह विशेष नीवेदन है की अपने गाँव में उत्तरायण पर्व झोली निमित्त जो कुछ भी अन्न, रोकड में और जीवन जरुरी अन्य चीजें जो दान में मिले उन सभी चिज वस्तुओ को अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में 'आंगन' की कचेरी में भेज कर उसकी स्वीकृति भी लेले। यह सारी चीजो का दान बहुत सारे जरुरीयात मंद लोगो तक पहोंचाया जायेगा। यह संकल्प हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री का है। इसीलीये यह 'आंगन' सेवा प्रवृति प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की निगरानी में हमारे सत्संगी महिला भक्तो के द्वारा होगी।

विगत	मूल्य	वजन	प्रति ५ कि. का मूल्य	आपकी सेवा (रु. में)
चावल	३०५०	१०० की.	१५५	
गेहू	२०००	१०० की.	१००	
मग	८०००	१०० की.	४००	
तल	२४००	२० की.	६००	
चनादाल	२४००	१०० की.	६००	
तुवेरदाल	१००००	१०० की.	५००	
मोगरदाल	७२००	१०० की.	३६०	
शुध्धघी	६०००	१ डीबा	२०००	
तेल	१३००	१ डीबा	४३०	
गुड	५०००	१०० की.	२५०	
चीनी	४१००	१०० की.	२०५	
कुल	५१४५०		५६००	

यह दान आप वस्तु या रोकड के रुप में अन्यथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के नाम से चेक या ड्राफ्ट के रुप में भी दे सकते हैं।
स्थान : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद,
दूरभाष : ८३३८००१६६६, ९९०९९६७१०४

महंत स्वामी
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के
श्रीहरि स्मृति सहित जयश्री स्वामिनारायण

૧. કુશવાસ (ઈડર) મંદિરમાં યુવા શિબિર પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી. ૨. ખાણુસા નૂતન મંદિરનું ભૂમિપૂજન કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૩. મહેસાણા મંદિરમાં દિવાળી પ્રસંગે અન્નકૂટ દર્શન. ૪. નાથદ્વારા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા સંતો.૫. બળોલ (ભાલ) મંદિરના ૧૩માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પૂ. મહારાજશ્રી. ૬.મહેસાણા ગામના હરિ મંદિરના ૧૦૩માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા સંતો.

૧. કાલુપુર સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં નૂતન વર્ષના ઠાકોરજીની અન્નકૂટની આરતી ઉતારતા શ્રીહરિના છઠ્ઠા, સાતમાં અને આઠમાં વંશજ. ૨. કાલુપુર સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં દિવાળી પ્રસંગે સમૂહ ચોપડા પૂજન કરતાં પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી. ૩. કાલુપુર સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં કાળીચૌદશના શ્રી હનુમાનજીનું પૂજન કરતાં પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી. ૪. દિવાળી પ્રસંગે પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. શ્રીરાજા શાહીબાગ કેન્ટોનમેન્ટ (મિલેટરી કેમ્પ)માં ભારતીય સૈનિકોને પ્રસાદ આપવા પધાર્યા તે પ્રસંગે સૈનિક અધિકારી સાથેની તસવીર.

1

2

3

4

5

૧. કાલુપુર સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના ૪૬માં જન્મોત્સવ પ્રસંગે પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. મોટામહારાજશ્રી સાથે કેક કાપતાં પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨ પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના ૪૬માં જન્મોત્સવ પ્રસંગે કાલુપુર મંદિરના પ્રાંગણમાં નિર્માણ થયેલ "આંગન"ને ખુલ્લું મૂકતાં પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી તથા પૂ.શ્રીરાજાશ્રી. ૩. રંગમહોલ શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતાં પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી તથા અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મોટામહારાજશ્રી. ૪. શરદ પૂનમના શરદોત્સવની આરતી ઉતારતા સંતો. ૫. પ્રબોધિની એકાદશીના દિવસે રાત્રીના શ્રીનરનારાયણદેવ સમક્ષ ઓચ્છવ કરતાં શ્રીનરનારાયણદેવ ઓચ્છવ મંડળ.

૧. કાંકરિયા મંદિરમાં લાભ પાંચમના ભાવ સ્વરૂપ હનુમાનજી મહારાજના પાટોત્સવ પ્રસંગે અભિષેક કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨. સાયન્સ સીટી(અમદાવાદ) કથા પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી. ૩. માણસા ગામે શ્રી હરિ દ્વિશતાબ્દી આગમનમહોત્સવ પ્રસંગે છત્રીનું પૂજન કરતા, તથા આયોજીત પદયાત્રા પ્રસંગે પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી અને યુવક મંડળ સાથે દર્શન આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી..૪. સાપાવાડા મંદિરમાં શરદ પૂનમની આરતી ઉતારતા સંતો. ૫.નારણઘાટ મંદિરમાં શરદ પૂનમની આરતી ઉતારતા સંતો .૬. કોથ (રાજસ્થાન) નૂતન મંદિરની ખાત વિધિ કરતા સંત-હરિભક્તો. ૭. ગાંધીનગર(સે.૨)મંદિરમાં શરદપૂનમે યજમાનનું સન્માન કરતા કાલુપુર મંદિરના મહંત સ્વામી તથા સંત મંડળ.

सत्संग बालवाटिका

ऐसा विश्वास चाहिए

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

मित्रो ! बात श्रद्धा और विश्वास की है । बाद में क्यो न सेवा की बात हो धर्म की बात हो, भगवान की बात हो, भजन की बात हो, इसमें श्रद्धा और विश्वास से मूल है । जिसकी सेवा में श्रद्धा नही हो शंका हो ऐसी सेवा भगवानभी नही स्वीकारते है ।

आप अधिक मह में भाव का गेहूँ लाये हो, लेकिन भीतर इल्ली और धुन का भंडार हो उस गेहूं को पिसवाने का मन नही करेगा । उसे फेंक देना पडेगा । इसी प्रकार जिसकी श्रध्धा में जीव पड जाते है । ऐसी श्रद्धा भगवान नही स्वीकारते है । जिसकी सेवा करे श्रद्धा के साथ सेवा करे तथा फल प्राप्त होगा ।

श्रद्धा और विश्वास कैसा चाहिए ? इसको समझने के लिए संत कथा में उदाहरण देते है । कोई गुरु और शिष्य यात्रा करे रहे थे । एक के बाद एक तीर्थ स्थल का दर्शन करते हुए दूर चले गये और थक गये थे । रास्ते में पीपल के पेड के नीचे दोपहर में सो गये । शिष्य सो गया. नसकोरा की आवाज आने लगी तथा गुरु जग रहे थे । आवाज आने पर गुरु बैठ गये । बगल में एक साँप चक्कर लगा रहा था । गुरु को समझ आयी की पत्थर निकाल लकडी को पीटे तो यह चला जायेगा । पत्थर उठाने पर एक दम आवाज आई, ''मुझे मारना आवश्यक नही है ।'' आप से मेरी कुछ लेना देना नही है । लेकिन यह सोने कला व्यक्ति पिछले जन्म का दुश्मन है । शत्रु है इस लिये मेरी इच्छा है इसके गले का खून पीना है मेरी शत्रुता तृप्त हो जायेगी । मैं संतुष्टहो जाउगा ।

गुरु को ऐसा लगा कि जन्म-जन्म का प्रारब्ध तो प्रत्येक का अलग-अळग होता है । यह मेरे शिष्य को काटेगा इसके मुँह मे कितना रक्त जायेगा ? लेकिन मेरे शिष्य का जीवन समाप्त हो जायेगा । गुरु शीध्रता से निर्णय लिये । सर्प से पूछे, आप को इसका खून ही पीना है ? हाँ, मेरे मन की एक अतृप्त वासना रह गयी है । मैं इसका खून निकाल कर दूँ तो ? ले, आइसे मुझे तो खून पीना है । गुरुजी झोले में से घूरी निकाले जिससे हमेशा लौकी काटते थे । पीपल का पत्ता लिये ।नसकोरा करते सिष्य के बगल में बैठकर सर्प को खून देना था । इस लिये गले में छुरी चुभाये इतने में शिष्य जाग गया । कौन नही जगेगा ? कैसी भी त्वचा पर छूरी का प्रहार हो तो जीव तो जाग ही जायेगा । शिष्य एकदम आँखे खोला, ये तो गुरुजी है, छूरी लेकर गले पर फेर रहे है । कोई बात नही है । वह पुनः सो गया ? आँख बंद करके सो गया ।

दो-चार बूँद खून का पीपल के पत्तेप र गिर गया । वह पत्ता लेकर गुरुजी साँप के पास रख दिये । सर्प अपनी लहरती जीभ से दो-चार बूँद पीकर चला गया । उसके बदले की भावना शांत हो गयी ।

गुरुजीने देखा । अभी रक्त निकल रहा है । इसलिये पीपल की कोमल-कोमल पत्ती को लेकर पत्थर पर पीस कर लेप बनाकर गले पर लगा दिये । कुछ समय पश्चात शिष्य जगा । पूजा की थैली और सामान उठाकर शिष्य और गुरु तेजी से चलने लगे ।

अब गुरु संशय में आ गये । मुझसे पूछता भी नही कि दूरी क्यो मारा ? यह शिष्य क्यो नही बोल रहा है ? इसके मन में कुछ संसय तो नही है । अर्थात् तुरंत पूछते है कि तुम्हे ज्ञात है क्या मैने तुम्हारे गले पर छूरी से प्रहार

किया था, क्यो किया था ? मुझे जानने की आवश्यकता नही है । आप जो किये होगे मेरे हित में ही किये होगे । ऐसा मुझे दृढ विश्वास है और मुझे श्रद्धा है । आप मुझे फूलो का हार पहनाये तो भी अच्छा गले पर दूरी फेरे तो भी अच्छा ये मेरी श्रद्धा है । अर्थात् जानना आवश्यक नही है ।

भगवान के स्वरुप में ऐसी श्रद्धा हो, ऐसी श्रद्धा के साथ हम ठाकोरजीकी सेवा करे तो ऐसी सेवा भगवान स्वीकारते है । सीधे-सीधे स्वीकार कर लेते है । लेकिन श्रद्धा में शंका हो तो आप याना खाने बैठे तो थाली में कीडा दिखाई दे खाना अच्छा नही लगता है । आप उठ जायेगे । उसी प्रकार जिसकी सेवा में श्रद्धा की कमी दिखाई देती है । तो प्रभु उसे त्याग देते है । सेवा से पूर्व पात्र अवश्य देखे । सच्ची श्रद्धा और विश्वास रखकर भगवान की सेवा और भजन करना चाहिए ।

●

लक्ष्मीजी कहाँ निवास करती है ?

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

बाल मित्रो ! जिसका लम्बे समय से राह देखते है । ऐसी दिवाली – नया वर्ष मना लिया भी गया । अभी लोग अपने अध्ययन तथा क्रिया कलाप में लग गये है । दिवाली आने पर कैसा माहौल हो जाता है । धर में रंग-रोशन, नये वस्त्रो की खरीदी, फटाकडे, पोडना, एक-दूसरे से मिलने जाना इत्यादि होता है । मंदिरो में कई उत्सव मनाये जाते है । उनका दर्शन करके आनंद आता है । दिवाली के दिन घर में लक्ष्मी पूजन करते है । दिवाली के दिन ही क्यो लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है । दिवाली के दिन ही लक्ष्मीजी का जन्म दिन होता है । इस कारण से उनकी पूजा की जाती है ।

आज जब लक्ष्मीजी-दिवाली की बात हो ही रही है तो एक सुंदर शांत से पढ़ने वाली जीवन में धारण करने वाली बात याद आ गयी है । यह बात किसी एक परिवार की है । यदि इसे ध्यान से पढे और आचरण में लाये तो प्रत्येक परिवार के लिये उपयोगी हो सकती है । जो समाज हित भी करती है ।

एक शहर में अच्छी जगह पर एक हवेली थी । उसमे एक सुखी परिवार रहता था । घर में भौतिक सुख सुविधाव थी ही लेकिन परिवार में सुमति और संस्कार भरा था । प्रतिदिन शायं और सबेरे इस घर में भगवान के साथ लक्ष्मीजी की आराधना होती थी । लक्ष्मीजी एवम् भगवानकी कृपा इस परिवार पर अनन्य थी ।

प्रतिदिन तो पूजा होती ही थी । लेकिन दिवाली के दिन बड़े धूमधाम से सारा परिवार हाजिर होकर विशेष पूजा करते थे । पुरी खुशी के साथ पूजन पूर्ण ही होने वाला था कि इतने में अचानक कमरे में प्रकाश आया । वह प्रकाश ऐसा था कि दीपक मंद पड गये । अचानक प्रकाश देखकर सभी लोग भय से आश्चर्य चकित हो गये । अभी कुछ सोंचते इतने में प्रकाश में साक्षात् लक्ष्मीजी दिखाई दी । सभी लोग हाथ जोडकर माताजी को प्रणाम किये तथा उनके सामने खडे रहे ।

लक्ष्मीजी कृपा करके बोली – आप वर्षो से भगवान के साथ हमारी पूजा – अर्चना कर रहे है । इस लिये आप सभी से प्रसन्न हूँ । वर्षो से आप के घर में सुख-समृद्धि के रुप में निवास करती हूँ । आप को ज्ञात ही होगा कि मेरा स्वभाव चंचल है । मैं कही स्थायी रुप से निवास नही कती हूँ । आप को ज्ञात ही होगा मेरे रहने से वहाँ सात मंजिल मकान बन जाता है । समृद्धि आ जाती है । वहाँ से हट जाने के बाद सब कुछ बिखर जाता है । अपने स्वभावगत गुण के कारण में यहाँ से जाने वाली हूँ. लेकिन आप का घर बिखर न जाये इस लिये एक वरदान माँग लो सुखी रहो इस लिये कहने आई हूँ ।

तुरंत तो क्या विचार आये। सभी लोग संशय मे आ गये यह देखकर लक्ष्मीजीने कहा, आप सभी सोच के रखना कल में फिर दर्शन दूँगी तब माँग लेना। यह बोल कर देवी अदृश्य हो गयी। थोडे समय के बाद वृद्ध बड़े सेठ की अध्यक्षता में बच्चो, बहुओ, पौत्र, पौत्री, उनकी पत्नियाँ, छोटे बच्चे मीटींग करने लगे। सबको अपना विचार रखने की स्वतन्त्रता थी। सभी बहनो की तरफ से सुझाव आया कि सात पीढी तक के लिये सोना माँ गले, युवक विद्या चाहते थे। यदि विद्या होगी तो सब कुछ मिल जायेगा। तभी बडेने कहा मैने कई विद्याधरो को देखा है कि किसी प्रारब्ध के करण पाँच उपवास करना पडा था। काफी विचारने के बाद कुछ हल नही आया। तभी सभी ने सर्वानुमत से निर्णय किये कि जो दादाजी को बोले, दादाजी इस घर की समृद्धि आप के द्वारा ही है। हमे आप के उपर विश्वास है। आप जो कुछ माँगेगे हम सभी को स्वीकार होगा तो दादाजी बोले जो मुझे योग्य लगेगा माँग लूगा। आप सभी को सहमत रहना होगा। अन्ततः दादाजी पर विश्वास रखकर सब शांत हो गये।

शांति हुई समयानुसार लक्ष्मीजी ने तेजामय दर्शन दी। सभी लोग हाथ जोडकर लक्ष्मीजी के सामने खडे हो गये। लक्ष्मीजी के कथनानुसार दादाजी वरदान माँगने लगे। हे माताजी ! आप की कृपा से ही हम सुखी है। घर में सुमति, सुख, समृद्धि, संतान, खुशहाली सभी है फिर भी आप की आज्ञा है इस लिये माँग रहा हूं कि मेरे इस परिवार में सदैव सुमति बनी रहे ऐसा वरदान दीजिए।

क्यो दादाजी शब्द को बोले, तो लक्ष्मीजी बोली। यह क्या माँग लिये। कुछ और माँगिये। सुमति से पेट थोडे ही भरेगा ? लक्ष्मीजी विचारने लगी की इसके विचार बदल जायो। दूसरा कुछ माँग ले तो शांति हो जाये। लेकिन दादाजी दृढ निश्चय करके बोले, माताजी मुझे दूसरा कुछ नही चाहिए। केवल सुमति रहे ऐसा वरदान हे।

लक्ष्मीजी खुश होकर तथास्तु बोल दी और खुश होकर कहने लगी। मैं आप के घर से कहीजा ही नही सकती हूँ। वैसे तो मेरा स्वभाव मैं जहाँ से चली जाती हूँ वहाँ पर कुमति बढ जाती है। रहने पर भी कुमति बढती है। बढी कुमति पर मैं चल जाती हूँ। आप ने मुझसे सुमति मांगी है इस कारण से आप के पास सुमति और सम्पति दोनो रहेगी। सम्पत्ति आने पर सुमति बनी रहे वहाँ से सम्पत्ति खत्म नही होती है। और विपत्ती भी नही आती है। इतना बोलकर लक्ष्मीजी अंतर्ध्यान हो गयी यह परिवार स्थायी रुप से सुखी हो गया।

मित्रो ! प्रारब्ध में ही कहे ते यह बात अधिक शांति से ध्यानपूर्वक पढियेगा। है महत्वपूर्ण बात ? कोई भी व्यक्ति चाहे गरीब हो, फटेहाल हो, विद्वान हो, अशिक्षित हो, बडा हो, छोटा हो प्रत्येक के लिये सुमति गुणकारी सुखकारी है। कई बार छोटे व्यक्ति के साथ भी कुमति परेशान कर सकती है। इसलिये कहा जाता है कि प्रगति और सुख सुमति के आभारी है और अधोगति दुख ये कुमति के आभारी है।

आप को ज्ञात ही है इस युग का नाम कलियुग है। कलि अर्थात् कुमति। जो भी व्यक्ति ऐसे कलियुग में सुमति रख रखता है वही पर लक्ष्मीजी सुख-शांति पूर्वक निवास करती है - इस लिये महात्मा गोस्वामी तुलसीदासजीने कहा है कि -

''जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना, जहाँ कुमति वहाँ विपत्ति निधाना''।

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "हमारा सत्संग एक खजाना" है
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आप खजाना खोले तो उसमें से हीरा-मोती माणेक इत्यादि ऐसे कई धन प्राप्त होगे परन्तु हमारा सत्संग रुपी खजाना है। यह हीरा, मोती, माणेक से भी मूल्यवान है । सत्संग के माध्यम से मोक्षरुपी खजाना प्राप्त होता है । हमारे सत्संग में 'शिक्षापत्री' और 'वचनामृत' ये दो शास्त्र है ये बड़े खजाने के समान है। क्यो किये ? सम्पूर्ण जगत में भगवान द्वारा सीधी कही गयी 'वाणी' किसी भी शास्त्र मिल सके ऐसा नही है। 'वेद' भी भगवान की वाणी है। लेकिन वह भगवान ब्रह्मा के कहे और ब्रह्माजी के पास से ऋषु मिनि ने सुना इस प्रकार इसकी रचना हुी है । और 'श्रीमद् भगवतगीता' वह भी भगवान श्रीकृष्ण की वाणी है। भगवान श्रीकृष्णने अर्जुन को युद्धभूमि में उपदेश दिये थे। और बाद में व्यासजी महाभारत की रचना की उसमें जुडी है और अपना 'वचनामृत-२७३' ऐसा शास्त्र है जिसको श्रीजी महाराज के वचनामृत रुपी वचनो को नंद संतोने तुरन्त रचना की है । और 'शिक्षापत्री' तो भगवान की हस्त प्रत है। संसार के सभी धर्मो और सर्व धर्म पुस्तको की शुरुआत से लेकर सब कुछ आ जाता है। ऐसी छोटी 'अनुभवपत्री' कल्याण देने वाली कही भी नही मिलेगी । सर्वावतारी सर्वोपरी भगवान स्वामिनारायण के प्रतिदिन जीवन में परेशान करने वाले प्रश्नो के बारे में जानना हो तो ''शिक्षापत्री'' सबसे सरल साधन है। 'शिक्षापत्री' यह एक मात्र साम्प्रदायिक ग्रन्थ नही वरन मानव के लिये उपयोगी है । जीवन में कोई प्रश्न आये तो शिक्षापत्री से पूछे और शिक्षापत्री के फेज फेरने और किस आज्ञा के न पालन से दुख हुआ उसका उत्तर मिल जायेगा । नंद संतो के पास से भी श्रीजी महाराज अपनी उपस्थिति में अपने सम्प्रदाय के धर्मशास्त्र लिये गये। अर्थात् श्रीजी महाराज ने हमे इस पृथ्वी पर आकर कितने अधिक दिये है। इससे हमे खुश होना चाहिए। महाराज को हम लोगो के उपर कितना विश्वास है। तथा हम लोको को सत्संग रुपी खजाना दिये है। तो इसलिये हम लोगो को ध्यान रखना है कि हमारे अन्दर क्या है जो हमे परमात्मा से दूर कर रहा है और हमारा लक्ष्य क्या है तो यह देहाभिमान और अहंकार मुख्य ये दो मूल पाप के कारण है। जो हमारे लक्ष्य को खो देता है क्यो कि ? हमसे जो भी पाप होता है। वह देहाभिमान और अहंकार के कारण होता है। अपने से जीव के प्रति हिंसा हो जाती है, अयोग्य आचरण हो जाता है न करने पर भी हो जाता है ये सब अभिमान और अहंकार के कारण होता है । ऐसा न हो इसके लिये परमात्मा से बार-बार प्रार्थना करना चाहिए। बार-बार परमात्मा के चरण में माफी माँगने से अपना देहाभिमान और अहंकार कम हो जाता है।

अनुकूल समय आयेगा और परमात्मा का भजन करेगे ऐसी रास्ता क्यो देखना ? अनुकूलता - प्रतिकूलता सदैव बनी रहती है। प्रहलाद को अनुकूलता थी ही नही लेकिन उनका लक्ष्य था कि इस लिये वह घर में रहकर प्रार्थना किये । भरत जीवन में ये सबकुछ

अनुकुल था लेकिन मृगला पर आसक्त हो गये । तो कहने का अर्थ है कि यदि सावधान रहेगे तो विपरीत अवस्था में प्रभु का नाम ले सकते है । सब कुछ सामान्य होने पर भी आदमी भगवान की भजन नही कर पाता है । क्योकि ? घर में रहने वाली कोई वस्तु अवरोध नही करती है । अपने अंदर व्याप्त माया हर जगह पर बाँधी डालती है । सावधान रहने पर घर में भी जागृत रह सकते है । आप संसार को कभी खुश नही कर सकते है । राम भगवान थे फिर भी खुश नही कर पाये तो हम लोग कहाँ कर पायेगे । इस लिये सृष्टि को खुश न करे लेकिन सृष्टि के रचयिता को खुश करे ।

एकबार नारदजी बोले तीन वस्तु करने परप्रभु खुश रहते है । प्रथम जीवो पर दया करे, कभी हिंसा न करे तथा दूसरे को मनसा, वाचा, कर्मणा से किसी को दुःखी मत करिये । तीसरा इन्द्रियो पर नियन्त्रण रखे । ये तीन बाते करने पर प्रभु खुश रहते है । पतंगे दीपक के प्रति आकर्षित होते है । पतंगिया को ज्ञात होता है कि वहाँ जाने पर कष्ट हो जाता है । तो भी दीपक के पास जाता है । और नष्ट हो जाता है । अपनी ईन्द्रियाँ भी दीपक के समान है । हमारी वृत्ति पतंगो के समान होते है । हमे ज्ञात है कि संसार का सुख बिना शीध्र है । फिर भी अपने वृत्तियो और ईन्द्रियो पर नियन्त्रण न होने के कारण प्रत्येक मनुष्य को संसार का सुख चाहिए ही । इस प्रकार सामान्य मानव संसार में लिप्त हो जाता है । तथा इसी में विनाश को प्राप्त हो जाता है । लेकिन हम लोगो को महाराजने सत्संग रुपी खिजाना दिये है । उसका उपयोग करके संयमी, विवेकी बनकर संसार में रहते हुए सावधानर हना चाहिए । तपस्या करना है । तप का अर्थ है कि हमारा मन परमात्मा से एक क्षण भी दूर न हो यही सबसे बडी तपस्या है । संसार में रहकर भी परमात्मा के चरणो में हम बने रहे अखंड वृत्ति रहे । यह बड़ी बात है । महाराज आप सभी के सत्संग की वृद्धि करे ऐसी महाराज के चरणो में प्रार्थना करते है ।

●

ताली का महात्म्य

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

संसार के अधिक से लोग स्वस्थ रहने के लिये जीम मे जाते है और डायटिंग भी करते है । तथा हेल्थ सेन्टर में भी जाते है । आज स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिये निशुल्क सरल और प्रभावशाली उपाय है ''ताली बजाना'' ये ऋषियो मुनियो की साइन्स है ।

श्रीजी महाराज वचनामृत में १२ में कहते है कि ''कीर्तन-नाम-स्मरण ताली बजाकर हाथ की अंगलुयिा फट जाय इस तरह किये है । सक्यूप्रेशर के सिद्धान्तनुसार मनुष्य के हाथ में पूरी शरीर के अंग प्रति अंग का प्रेशर प्यावांइट (दवाब केन्द्र) होता है । जो ताली बजाने से दबता है । अंगनुसार स्वास्थ्य को सुधारता है । निष्कुलानंद स्वामीने भी कहा है । ''ताली पडे उपजडती अति सारी रे, धून थाय चौद भूवन थकी न्यारी रे'' ताली ऐसी बजानी चाहिए कि चौदह ब्रह्मांड में सुनाई दे । ऐसे ताली बजाने से एक्यूप्रेशर बिन्दु पर दबाव पडता है । ताली बजाने के की लाभ है ।

हमारे शरीर में कुल ३४० जितने प्रेशर बिन्दु है । जिसमें २९ अपने हाथ में ही है । प्रत्येक अंग दूसरे अंग के चेतातंत्र से जुडा है । ताली बजाने से रक्त नलिकायें उत्तेजित होकर हृदय, मूत्र पिंड, मरतिष्क, पाचन तंत्र पर लाभ देते है । ताली बजाना उत्तम व्यायाम है ।

ताली बजाने से ५ मुख्य एक्यूप्रेशर रवाइंट पर दाब पडता है । ये पाँच प्रेशर खाईट अलग-अलग अंग पर प्रेशर डालता है । ताली बजाने में ये प्रारम्भ जाते है । जिससे निम्न लिखित लाभ मिलता है ।

(१) ताली बाजने से बाये हाथ का फेफडा, लीवर, आँत, किडनी, तथा दाहिने हाथ से साइनस

प्वाइंट दबता है। इससे खून में कीलेट ट्रालय कम होताहै । तथा रक्त नलिका में अवरोध दूर होता है। और प्रत्येक अंग में खून का भ्रमण अच्छे से होता है।

(२) लगातार ताली बजाने से खून की सफेद रक्त कणिकाये वृद्धि करती है। जिससे रोग प्रतिकारक क्षमता बढती है।

(३) पाचनतंत्र की कार्य क्षमता बढती है। अपच, एसेडीटी, कब्ज जैसे पेट की तकलीफ से राहत मिलती है।

(४) बालक भी ताली बजाये तो एकाग्रता और यादशक्ति बढती है। आँख और हाथ का तालमेल बढता है। ताली बजाने से रक्त में आनंद भी मिलता है। लयधारण करने में दिमाग को सहायक होता है। ये उपरोक्त गुण इसके है।

सर्व प्रथम नारियल या सरसो का तेल हथेली मे लगाकर रगडना चाहिए। पैर में चप्पल पहन लेना चाहिए। जिससे उत्पन्न होने वाली ऊर्जा नष्ट न हो । दोनो हाथ समानान्तर दूर सामने रखकर, अँगुली, अगुली को अँगूठा, अंगूठे को स्पर्श करे जोर से ताली बजाने से अधिक ऊर्जा बनती है। इस ताली को ऊर्जा ताली भी कहते है । इस तरह प्रतिदिन २० से ३० मिनट बजाने से कोलेस्ट्राल कम रक्त प्रवाह बढता है। सिर का बाल काला होता है। यह कसरत प्रातः करने से शरीर पूरे दिन स्वस्थ और सक्रिय रहता है । प्रतिदिन ताली बजाने से डायबीटिज, संधिवा, अनिद्रा, आंख सम्बन्धी रोग से राहत मिलती है।

हम लोग ध्यान कीर्तन हो रहा हो तो आँख बंद करके ध्यान करने से नीद आती है। जो स्वाभाविक है। लेकिन ताली बजाने से शरीर सक्रिय रहती है। जिससे आलस्य और नीद दूर होती है। मन गायन में लगता है। और स्वास्थ्य ठीक रहता है। इससे बाद ताली बजाने कई प्रकार है। निश्चित प्रकार के रोग हेतु कैसी ताली बजाये हम संक्षिप्त में सुचना दे रहे है।

(१) अँगूली ताली : हाथ की हथेली पर दूसरे हाथ की चारो अंगुलियो से तब तक ताली बजाये कि जब तक हथेली लाल न हो जाये। इस प्रकार की ताली से कब्ज, अम्लता, रक्त, मल्पता, साँस की तकलीफ जैसे रोग में लाभ मिलता है।

(२) थप्पी ताली : इस ताली से हाथ को समानान्तर रखकर अंगूली पर अंगूली तथा हथेली पर हथेली आये इस प्रकार ताली बजाना चाहिए । इससे गर्दन की कमजोरी, डिप्रेशन, अनिद्रा, रीढ की हड्डी आँख की कमजोरी जैसी समस्या में राहत होती है।

(३) ग्रीपताली : दोनो हाथ की हथेलियाँ एक दूरे पर ऐसी मारे के चौकोर बने। इस ताली से शरीर में अधिक पसीना बनता है। जिससे शरीर के बेकार तत्व पसीने में बाहर आ जाते है। और त्वचा स्वस्थ रहती है।

(४) वृत्ततली : खडे होकर हाथ सामने लाकर धुमाकर ताली बजाते है। यह नीचले रक्त दबाव के लिये अच्छा है। रोगी के लिये रामागण है। इस लिये भक्तो आज से ही आलस्य प्रमाद छोडकर भजन, कथा के समय जोर से ताली बजाये नियमित रुप से ऐसी सरल कसरत करके शरीर और मन स्वस्थ रखे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४६ वे प्रागट्योत्सव का धूमधाम से मनाया गया

विश्व सम्प्रदाय का सर्व प्रथम महामंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ४६ वे प्रागट्योत्सव ता. १९-१०-२०१८ विजया दशमी के दिन धूमधाम से मनाया गया।

प्रसादी के सभा मंडप में प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री श्री नरनारायणदेव ऋंगार आरती किये दर्शन करके विराजमान हुए। मंदिर के गोर श्री कमलेशभाई आदि विप्रो ने स्वस्तीवाचन पूजन अर्चन किये थे। जन्मोत्सव के मुख्य मेहमान मांडवी कच्छ से श्री वृंदावन विहारी हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री के प्रशन्नता के लिये मांडवी मंदिर के उ.म. सां.यो. कानबाई (फईबा) शिष्य सां.यो. अमरबाई तथा अमारा, सां.यो. मेघबाई के साथ सां.यो. महंत रतनबाई तथा समस्त सांख्ययोगी बाईयो की तरफ से मांडवी के हरिभक्तोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारी पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये। तीर्थो से आये संत महंतश्रीओ प.पू. आचार्य महाराजश्री का ४६ वाँ प्रागट्योत्सव पर अपनी शुभ भावना प्रेम व्यक्त किये। सभा का सुंदर संचालन स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)ने शोभा बढाये गया।

आज के शुभ मंगल दिन पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के शुभ संकल्प से अनाथ बच्चो के लिये ''आँगन'' का प.पू. श्रीराजा के शुभ हाथो द्वारा श्री नरनारायणदेव की पुस्तिका का विमोचन श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के हाथो द्वारा किया गया। इसकी पूरी सेवा संप्रदाय के मूर्धन्य विद्वान कथाकार पू. स.गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी (गांधीनगर) द्वारा किया गया। उनके शिष्य शा.स्वा. हरिप्रियदासजीने प.पू. महाराजश्री खूब खुश होकर आशीर्वाद दिये। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने प्रेम भरा आशीर्वाद प्रदान किये।(शा.स्वा. नारणमुनिदास)

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिवाली के त्यौहार का भव्य उत्सव

काली चौदश : ता. ६-११-१८ दिन मंगलवार के शुभ दिन पर सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वंय के हाथो द्वारा स्थापित धर्मकुल के कुल देवता श्री हनुमानजी महाराज का पूजन-अर्चन अन्नकूट आरती प.पू. आचार्य महाजश्री के शुभ हाथो द्वारा पूर्ण हुए। पूजारी महादेव भगत और बाबू भगत इस प्रसंग को शोभित किये।

दिवाली समूह शारदा पूजन चोपडा पूजन :- ता. ७-११-१८ बुधवार क परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और प्रसादी भव्य सभा मंडप में अपनी परम्परा के सुंदर लाभ रुप में शारदा पूजन चोपडा पूजन शायं को ६ बजे से ७-३० के पीच प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा कालुपुर मंदिर के विद्वान पंडित श्री कमलेशभाई गोर द्वारा विधिवत रीत से पूर्ण हुआ। जिस में हजारो हरिभक्त व्यापारी और उद्योपगतियोने अपने चोपडा का पूजन कराये। तथा अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुए।

नूतन वर्ष के श्री नरनारायणदेव समक्ष भव्य छप्पन भोग अन्नकूट महोत्सव : नूतन वर्ष कार्तिक सुद-१ ता. ८-११-२०१८ गुरुवार के दिन प्रातः ५-३० बजे हमारे प.पू.

बड़े महाराजश्री परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती किये थे । इसके बाद श्रृंगार आरती और ध्यान भोग अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आरती किया । शहर के हजारो हरिभक्त प्रातः ५-३० से शाय ५-३० शायं तक देव दर्शन किये । धर्मकुल की बैठक में प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री का दर्शन करके हर्षोल्लास के साथ नया वर्ष मनाये ।

पूरे अवसर में कालुपुर मंदिर के स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा उनके मंडल के संत पू. हरिचरण स्वामी (कलोल) भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, भक्ति स्वामी, नटु स्वामी आदि संत मंडल समग्र दिवाली के अवसर पर भव्य रोशनी, सुशोभन उसी प्रकार अन्नकूट प्रसाद का गाँव में वितरण इत्यादि सुंदर सेवा संत हरिभक्तो के साथ किये । (को. शा. नारायण स्वामी)

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर हवेली (बहनो की) द्वारा आयोजित भव्य त्रिदिनात्मक बालिका शिबिर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मी स्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा उसी प्रकार उनके शुभ सानिध्य में दिवाली के पवित्र दिवस में ता. १०-११-१८ से १२-११-१८ तक दिव्य बालिका शिबिर का भव्य आयोजन पूर्ण हुआ ।

जिसमें २०० जितनी बालिका उसी प्रकार युवतियोने भाग लिया था । इस शिबिर में बच्चियो का आध्यात्मिक तथा सामाजिक रुप से सर्वांगी विकास बढ़े । इस विषय को ध्यान में रखकर सांख्ययोगी बहनो द्वारा उनका मार्गदर्शन पूरा किये तथा प्रोत्साहित भी किये ।

शिबिर के समय खेल, आँगन मुलाकात, मंदिर के आस-पास आये स्थलो के दर्शन धार्मिक प्रश्नोतरी कीर्तन, अन्ताक्षरी जैसे अनेक प्रवृत्तियो की गई ।

समस्त शिबिरार्थी और बालियो, युवतियो को गादीवालाश्री ने दर्शन-आशीर्वाद का अलौकिक लाभ दिये ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर (हवेली) में हो रही एकदशी सभा का दश वर्ष पूर्ण हुआ । उसके कारण भव्य महिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मी स्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञासे हवेली में नियमित होने वाली एकादशी सभा १० वर्ष पूर्ण होने पर ता. १८-११-१८ को दिन असारवा श्री सहजानंद गुरुकुल में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया । जिसमें अहमदाबाद के प्रत्येक क्षेत्र से आई बालिकाओ और बहनो द्वारा सुंदर नाटक और रास गरबा का आयोजन हुआ । जिस में सत्संग के फर्ज पर बालिका सभा युवती सभा ने अपने बच्चो को भेजना सत्संग के मुक्त जानबाई जैसे पात्रो को करके बहनो की भक्ति में लगातार वृद्धि हो ऐसा माता-पिता की सेवा करने से सुखशांति और प्रगति होती है । और सेवा न करने से जीवन में तकलीफो का सामना करना पडता है । ऐसे उपदेश की बात की गई । सकारात्मक लाभ कैसे होता है इस पर ध्यान दिया गया ।

इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने आकर समस्त कार्यक्रम की शोभा बढाई थी । इस कार्यक्रम में कालुपुर, बापुनगर, एप्रोच, कर्मशक्ति, निकोल, नरोडा, महादेवनगर, कांकरिया, नारणपुरा, राजीव, नया वाडज, अंजली, जनतानगर, झूंडाल हर्षदकोलोनी आदि क्षेत्रो की बहनोने अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुई । और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री सभी बहनो से अत्यधिक खुस हुई ।

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर (हवेली) प्रबोधिनी एकादशी जागरण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मी स्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा से और उनके शुभ सानिध्य में कार्तिक सुद-११ प्रबोधिनी एकादशी के श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हवेली में एकादशी जागरण सभा का भव्य आयोजन पूर्ण हुआ । जिस में २५०० जितनी बहनोने लाभ लिया । इस अवसर पर तीर्थो से आयी सांख्ययोगी बहने भी लाभ ली तथा सत्संग लक्षी देव के प्रति निष्ठा की बाते की । अंत में पूरे सभा को प.पू.अ.सौ. गादीवालाने प्रेमपूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया ।

श्री रंगमहल श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से तथा पू.

महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से तथा श्री घनश्याम महाराज पूजारी पू. देव स्वामी की प्रेरणा से प.भ. दिलीपभाई शाह के परिवार के यजमान पद पर श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव कार्तिक सुद-१२ को ता. २०-११-१८ को प्रातः ७-३० पर प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक वेद के विधि-विधान से पूर्ण हुआ। इसके बाद अन्नकूट की आरती की गयी।

इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से प्रातः बहनोने रंगमहल को देखकर लाभ लिये। (कोठारी शा. मुनि स्वामी)

सोलैया में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के अन्तर्गत गाँव सोलैया, ता. माणसा गाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से गाँव के मध्य में गाँव के मध्य मे चार मकान खरीदकर नूतन हरि मंदिर का निर्माण शुरु किया गया। गाँव में सत्संगी का अकेला घर था। लेकिन अगल बगल के गाँव की लडकियाँ वहाँ होने पर ५० घर में सत्संग का माहौल था। गाँव के धर्मप्रेमी हरिभक्तो के तन, मन और धन के सहयोग से मात्र दो वर्ष में ६० लाख के खर्च से दो मंजिला भव्य मंदिर तैयार हुआ। जेतलपुर मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकासदासजी तथा शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ने प.पू. आचार्य महाराजश्री को आयोजन की जिम्मेदारी दी गई। वे लोग सत्संग मंडल के सहयोग से मंदिर का निर्माण, सत्संग जागृति, उत्सव सहित सोलैया गाँव सत्संग की रंग रोशन की गई। ता. १२-११-१८ से ता. १६-११-१८ तक मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा विधि महोत्सव भव्य धामधूम से मनाया गाय। सम्पूर्ण गाँव पाटोत्सव में शामिल हुआ। तन, मन, धन से सेवा में जुड गये थे। बड़े वृद्ध, युवको ने उमडकर भाग लिये। पाँच दिन से श्रीमद् भागवत कथा रखी गयी थी। यहाँ वक्ता पद पर शास्त्री स्वामी देवस्वरुपदासजी माणसा मंदिर (नव निर्माण) के महंत स्वामी अपनी अग्रणी शैली में कथा करके श्रोताओ को खुश कर दिये। तीन दिन के विष्णुयज्ञ में ग्यारह कुंडी यज्ञ में शास्त्री अल्केशभाई दवे धीणोज वालाने शास्त्र विधि से पूजा हवन विधि करके मूर्तियो को संस्कार किचा गया। जेतलपुर मंदिर के संत मंडल उपस्थित रहे। भूज मंदिर के शास्त्री उत्तमचरण स्वामीने सभा का संचालन किये। जेतलपुर महंत के.पी. स्वामी के नेतृत्व में सभी संतोने भाग लिया। मूर्तियो की नगरयात्रा में पूरे गाँव में स्वामिनारायण महामंत्र से वातावरण पवित्र हुआ। पांच दिन तक सभी भक्तो के परिवार के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। मंदिर की निर्माण समिति के सदस्यो ने रात दिन एक करके तीन महीने तक महोत्सव को सफल बनाये तथा तन, मन और धन से सेवाये प्रदान की। (पोपटलाल चौधरी और पीथूभाई चौधरी का जय स्वामिनारायण)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (वासणा) श्रीमद् भागवत कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से और अंजलि मंदिर के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी के सुंदर आयोजन से तथा जेतलपुर धाम के महंत पू. स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू. शा. पी.पी. स्वामी तथा मूली मंदिर के स.गु. शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी (ट्रस्टीश्री मूली) के पावन में उपस्थित और यजमान परिवार अ.नि. चंदूभाई छोटाभाई पटेल के स्मरण में गं.स्व. भानुबेन चंदुभाई पटेल (चलोडा) के संकल्प से ता. १२-११-१८ तथा १८-११-१८ पर्यन्त श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद पर धूम-धाम से पूर्ण हुई। कथा का रसपान करने के लिये स्थानकि पालडी, वासणा, नवरंगपुरा, नारणपुरा, चंद्रनगर आदि क्षेत्रो से हरिभक्त आये थे। ता. १८-११-१८ के पूर्णाहुति अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री आये थे। सबको आशीर्वाद प्रदान किये गये थे। कथा के अवसर पर जेतलपुर के महंतश्री के.पी. स्वामी, भानु स्वामी आदि संत आये थे। मंदिर में सेवादे ने वाले भूदेव तथा हरिभक्त एवम् बहनो की सेवा प्रेरणा देने वाली थी।

अंजली मंदिर में तुलसी विवाह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलि में २०-११-१८ को सर्व प्रथम तुलसी विवाह का भव्य आयोजन किया गया। इस भव्य प्रसंग पर जेतलपुर धाम से पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी और स.गु. शा. स्वा. नारायणप्रसादासजी (मूली) आदि संत के हाजिर में अंजलि मंदिर के महंत वी.पी. स्वामीके सुंदर मार्ग दर्शन से प.भ. घनश्यामभाई सोमाभाई ठक्कर, पुत्र संजयभाई और राजेशभाई आदि परिवार यजमान बनकर अलौकिक लाभ लिये।

जिस में वर पक्ष में अशोकभाई नटवरलाल ठक्कर परिवार रहा था। ठाकुरजी की शोभायात्रा राजूभाई ललितभाई ठक्कर के घर से धुन कीर्तन करते मंदिर आये। इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे। अति प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये। इस अवसर पर जेतलपुर के महंतश्री के.पी. स्वामी तथा मूली से भानु स्वामी आदि संत आये थे। पूरे अवसर पर यहाँ पर सेवा भूदेव स्थानीय औरते और हरिभक्त खडे पैर पर किये। (कोठारीश्री अंजली)

आजोल गाँव में (ता. माणसा) कथा पारायण एवम भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी गांधीनगर के मार्गदर्शन में आजोल गाँव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा समस्त गाँव द्वारा ता. ९-११-१८ से ११-११-१८ तक श्रीमद् भागवत अन्तर्गत नवम स्कन्ध त्रिदिनातमक पारायण स.गु.शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर से-२) को वक्ता पद पर गाँव तथा आस पडोस गाँव के हरिभक्तोने रात्र ८-३० से ११-०० बजे तक कथा श्रवण करके जीवन धन्य किये। कथा में आने वाला जन्मोत्सव भी मनाया गया। इस अवसर पर भव्य शाकोत्सव भी मनाया गाय। इसके मुख्य यजमान गं.स्व. पुरीबेन सोमाभाई पटेल (कलावत) परिवार था। कथा के मुख्य यजमान गं.स्व. आनंदीबेन त्रिभोवनदास पटेल (डोजी) थे। कथा की पूर्णाहुति कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी की शुभ हाथो द्वारा हुआ। शाकोत्सव में १००० जितने भक्त प्रसाद लेकर धन्य हुए।(कमलेशभाई श्र आजोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काली गाँव ८ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा से तथा अ.नि. ईश्वरभाई मरधाभाई पटेल, गं.स्व. कमलाबेन ईश्वरभाई पटेल और अ.नि. कांतिभाई मरधाभाई परिवार की तरफ से कालीगाम समस्त समाज द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीगाँव के ८ वे पाटोत्सव ता. २३-११-१८ के दिन भव्यता से मनाया गाय। इस अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक बाद अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा किया गया। धामोधाम से संत तथा कालुपुर मंदिर से प.पू. महंत स्वामी आदि संत मंडलने भगवान श्रीहरि की महिमा-धर्मकुल महिमाकी बात की गयी। इस अवसर पर सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ने सुंदर रुप से किये। अंत में प.पू. महाराजश्री नरनारायमदेव प्रति सभी के निष्ठा बढे ऐसा आशीर्वाद प्रदान किये।(कोठारीश्री कालीगाम)

कडी गांव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर के निमित्त श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण नूतन मंदिर कडी के लाभ हेतु अ.नि. वसरामभाई जहाभाई पटेल अ.नि. साकरबेन वशरामभाई पटेल परिवार के, अ.नि. साकरबेन वशरामभाई पटेल परिवार के, अ.नि. पटेल ईश्वरभाई, गुणवंतीबेन ईश्वरभाई पटेल के तरफ से ता. १३-११-१८ से १७-११-१८ तक

श्रीमद् भागवत पंचान्हारायण विद्वान कथाकार स.गु.शा. स्वामी श्रीरामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद संगीत के मधुर ध्वनि से पूर्ण हुआ । इस अवसर पर कालुपुरमंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी आदि धामो से संत आये थे । अपने अमृत वाणी को लाभ दिये । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री को दर्शन आशीर्वाद देने आये थे । पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री आये थे । खुश होकर आशीर्वाद दिये । भूमिदान महायज्ञ भी उल्लास पूर्वक भूमिदान यजमान के द्वारा मनाया गाय । उपमुख्य मंत्री नीतिनभाई पटेल कथा का विशेष श्रवण किये थे । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुरा का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुरा का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २५-११-१८ रविवा रके दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण हुआ । इस अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट दर्शन धर्मकुल दर्शन आदि का कार्यक्रम हुआ ।

प्रासंगिक सभा में कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी ने श्रीहरि की सर्वोपरि उपासना दृढ हो ऐसा आशीर्वाद दिये । प.पू. आचार्य महाराजश्री सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये । सभा संचालन स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर से-२) शुभ रुप से पूर्ण हुआ ।

सभी हरिभक्तोने देव दर्शन, धर्म दर्शन करके शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए । (शा. व्रजभूषणदासजी - गांधीनगर से-२)

बालवा में श्रीहरि आगमन द्विशताब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी विष्णुप्रसाददासजी (सिध्धपुर) के मार्गद्रशन से बालवा गाँव में सर्व अवतार के अवतारी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान पधारे । उस प्रसंग को २०० वर्ष हुए इस अवसर पर २६-१-१८ से २८-१०-१८ तक श्रीहरि आगमन द्विशताब्दी महोत्सव अच्छे से मनाया गया । शुरु में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन पोथीवाला, न्याल प्रदर्शन दीप प्रगटीकरण से कथा को प्रारम्भ किया गया ।

समप्रदाय के मूर्धन्य विद्वान संत शा. स्वामी हरिकेशवदासजीने मंगल उद्घाटन किये थे । शा. विश्वस्वरुप स्वामी और शा. प्रेमस्वरुप स्वामीने व्याख्यानमाला में विषयानुसार उद्बोधन किये ।

रात्रि में सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ । ता. २७-१०-१८ शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी प्रातः एवम् शायं स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी अपने विषयानुसार उपदेश दिये । अलौकिक महापूजा में की भक्तोने लाभ लिया । पूर्णाहुति की आरती प.पू. लालजी महाराजश्रीने उतारी सभा में सबको आशीर्वाद दिये । रात में बालिका मंडल द्वारा नृत्य, नाटक, अभिनय गीत प्रस्तुत किये । ता. २८-१०-१८ के दिन प.पू. आचार् यमहाराजश्री वाचन महादेव से बालवा तक पदयात्रा करके आये थे । जिस में हजारो हरिभक्तोने संतो के साथ कीर्तन धून करते हुए आये थे । बच्चियोने सुंदर घडा के साथ महाराजश्री को स्वागत पूजन किये ।

गाँव के वरगद के नीचे पू. महाराजश्री आराम करके वरगदको धन्य किये । शा. वासुदेवचरण स्वामीने बालवा में श्रीहरि दो बार आये और अद्भूत बाते की थी । प्रसादी कुआँ के उपर पू. महाराजश्रीने आरती उतारी थी । सभा में कथा के पूर्णाहुति के बाद समस्त यजमानोने पू. महाराजश्री की आरती उतारे ।

प.पू. महाराजश्री के आशीर्वाद प्रवचन में प्रसादी कुआँ की धरोहर बताते हुए कह रहे थे । पूरे गाँव की बहनो को दर्शन आशीर्वाद देते हुए । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । तीर्थो से संत आते थे । बालवा गाँवके सभी

हरिभक्त और युवक मंडल अधिक मेहनत किये । दो सौ वर्ष में बालवा गाँव धन्य हुआ ।

इस अवसर पर प.भ. नारणभाई (शिक्षकश्री) और उनके सहयोगी श्री स्वामिनारायण अंक ६० जितने लाइफ सदस्य बनाकर प्रेरणादायक सेवा किये । (कोठारीश्री और कालुपुर मंदिर ट्रस्टीश्री चौधरी जीवणभाई लक्ष्मण - बालवा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली दिवाली उत्सव मनाया गया

परमकृपालु मूलीधाम में विराजमान श्री राधाकृषणदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वमिनारायण मंदिर मूली में दिवाली के समय काली चौदश को श्री हनुमानजी पूजन-आरती अन्नकटू आदि किया गया । श्री हनुमानजी की पूजन आरती अन्न् आदि किया गया । दिवाली का श्री लक्ष्मीपूजन शारदा पूजन मंदिर के विद्वान गोरभा द्वारा पूर्ण हुआ । नये वर्ष में भव्य छप्पन भोग, अन्नकूट का दर्शन, झालावाड, हालार, भाल के अनेक हरिभक्त दर्शन हेतु आये थे । कार्तिक सुद-११ एकादशी को भव्य तुलसी विवाह धाम-धूम से मनाया गया । यजमान परिवार ने अलौकिक लाभ लिये । सम्पूर्ण अवसर पर कोठारी ब्रज भूषण स्वामी, को हरिकृष्ण स्वामी घनश्याम स्वामी अने पार्षद भरत भगत प्रेरणात्मक सेवा किये थे । (कोठारी स्वामी - मूली)

सर्वोपरी छपैयाधाममां कथा पारायण

सर्वोपरी सर्व अवतार के अवतारी श्री घनश्याम महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदाजी की प्रेरणा से तथा छपैया धाम में महंत स्वामी ब्र. वासुदेवानंदजी के सुंदर सहयोग से ता. ५-१०-१८ से ता. ७-१०-१८ तक श्रीमद सत्संगिजीवन त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. त्यागवल्लभदासजी तथा शा. स्वा. सत्संगसागरदासजी वक्ता पद से और प.भ. घनश्यामभाई सोनी तथा राजू सोनी (चूडा) के यजमान पद से पूर्ण हुई । कथा श्रवण, महापूजा, प्रसादी, स्थानो का दर्शन हरिभक्त करके खुश हुए । सम्पूर्ण आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी की प्रेरणा से नरनारायणदेव युवक मंडल ने किया था । सम्पूर्म कथा में सभा का संचालन ब्र. शा. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी और श्री शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था । अन्य सेवा में अयोध्या मंदिर के महंत श्री देव स्वामी और चिरागभाई जुडे थे ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

स.गु. देवानंद स्वामी के श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल (भाल) का १३ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु मूलीधाम में विराजमान श्री राधाकृषणदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. देवानंद स्वामी के जन्म स्थल बलोल (भाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर का ३३ वाँ पाटोत्सव खुशी से मनाया गया ।

ता. २१-११-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा भाईयो और बहनो के मंदिर में ठाकुरजी अन्नकूट आरती हुई । राजपूत समाज की वाडी में भव्य सत्संग सभा हुई । जिसमें स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी ने गाँव में सत्संग और देव आचार्य के प्रति निष्ठा प्रगट किये ।

अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सूचना दिया तथा सभी को खुश होकर आशीर्वाद दिये । पूरे आयोजन पू. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी और शा. वासुदेव स्वामी (कांकरिया) के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ । प.पू. महाराजश्री नये पंचायत कार्यालय में ठाकुरीज की आरती

किये । श्री नरनरायणदेव युवक मंडल बलोल की तरफ से समस्त हरिभक्तो को प्रसाद स्वरुप भोजन कराये थे । (कोठारीश्री बलोल-भाल)

विदेश सत्संग समाचार

आई.एस.एस.ओ. हेमिल्टन (न्यूजीलैण्ड) में तुलसी विवाह

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से हेमिल्टन (न्यूजीलैण्ड) में सर्व प्रथम ता. १७-११-१८ के दिन तुलसी विवाह उल्लास पूर्वक मनाया गाय । प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा आशीर्वाद से यहाँ चार वर्षो से आई.एस.एस.ओ. द्वारा सत्संगि प्रवृत्ति होती है । हमारे आकलैम्ड मंदिर से ५० जितने बडे हरिभक्त बस द्वार तुलसी विवाह में भाग लिये थे । जहाँ पर सभी श्री हरिकृष्ण महाराज के साथ विष्णुजी के विवाह में भाग लिये थे । हमारे ऑकलैण्ड मंदिर के शास्त्री ने तुलसी विवाह विधी पूर्वक सम्पन्न किये । यहाँ पर सभी लोग समूह में प्रसाद लेकर धन्य हुए । इस अवसर पर हेमिल्टन के युवा हरिभक्त और युवति हरिभक्तोने परिश्रम करके अवसर की शोभा बढाये थे । (तुषारभाई शास्त्री - ऑकलैण्ड स्वा. मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) प.पू. महाराजश्री का प्रगटोत्सव-दिवाली उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आर्शीवाद से तथा ह्युस्टन मंदिर में सेवा करते सुव्रत स्वामी के सुंदर प्रयास से यहा ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में १४-१५ अक्टूबर को प्रातः ८ से ९ बजे तक स्वामी अध्यात्मानंदजी (एम) द्वारा योगशिक्षण तथा वर्कशाप सभी हरिभक्तोने सुंदर स्वास्थ्य की समझ पाये ।

प.पू. महाराजश्री का ४६ वाँ जन्मोत्सव : १९ अक्टूबर दशहरा के दिन सुव्रत स्वामी के मार्गदर्शन में शायं ६ से ९ बजे प.पू. महाराजश्री का ४६ वाँ जन्मोत्सव अवसर धुन-कीर्तन करके स्वामीने प.पू. आचार्य महाराजश्री के द्वारा देश-विदेश में होने वाली अनेक धार्मिक और सामाजिक प्रवृत्ति की सुंदर जानकारी दिये । सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के चित्र की पूजा करके केक काटकर जन्मोत्सव भव्यता से मनाया गया । इस अवसर पर यजमानो का सन्मान किया गया ।

दिवाली उत्सव : श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में बिराजमान ठाकुरजी सामने काली चौदश को श्री हनुमानजी को पूजन अर्चन आरती संतो द्वारा की गई । दिवाली में श्री लक्ष्मीजी का पूजन अर्चन विधिवत रुप से किया गया था । नूतन वर्ष में प्रातः मंगला आरती - ऋंगार आरती तथा अन्नकूट आरती में अधिक संख्या में हरिभक्त आये थे । सुव्रत स्वामी और दिव्यप्रकाश स्वामी अपने परम्परागत उत्सव के बारे में जानकारी दी गयी । प्रेसि. श्री गोविंदभाई पटेल और उनकी टीम सभी उत्सव में रसोई मंदिर, सुशोभन, रोशनी अच्छे से किये थे । (प्रविण शाह)

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) प.पू. महाराजश्री का ४६ वाँ जन्मोत्सव-दिवाली उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की खुशी तथा श्री भरत भगत के मार्गदर्शन से हमारे श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर ह्यूस्टन में. २० अक्टूबर शनिवार शाय ५ से ८ बजे के बीच दशहरा के दिन हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४६ वे प्रगट्योत्सव पर सभी हरिभक्तोने धुन-कीर्तन करके प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा की पूजा भव्यता से किये । भरत भगत ने प.पू. महाराजश्री की देश-विदेश की सत्संग की अविरत प्रवृत्ति और धर्मकुल के महात्म को बताये । सभी लोग केक काटकर जन्मोत्सव मनाये । सेवा देने वाले यजमान और महानुभावो को सनमान अच्छे से किया गया था ।

दिवाली उत्सव : हमरे श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर में दिवाली उत्सव भव्य पूर्वक मनाया गया ।

धनतेरस : सभी हरिभक्तो ने श्री लक्ष्मी पूजन हमारे मंदिर में विधि-विधान से किये ।

काली चौदश : श्री हनुमानजी दादा की पूजा-अर्चना करके सुन्दर अन्नकूट रखकर भरत भगतने आरती किये ।

दिवाली : दिवाली के शुभ अवसर पर सभी हरिभक्तो ने भगवान श्री घनश्याम महाराज का अलौकिक दर्शन करके सभा में भजन-धुन-कीर्तन किये ।

नूतन वर्ष अन्नकूटोत्सव : आज ठाकुरजी के दर्शन प्रातः से हरिभक्त विशाल संख्या में परिवार के साथ आये थे । आपस में मिलजुलकर वैरता भूलकर सभी ने जयश्री स्वामिनारायण, जयश्री स्वामिनारायण प्रेम से बोले । ठाकुरजी के सामने भव्य अन्नकूट रखकर भरत भगतने आरती किये । सभा में यजमानो का सन्मान और दिवाली के महत्व को समझाया गया । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर छपैयाधाम पारसीप में दिवाली उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पारसीप मंदिर के महंत शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी के सुंदर मार्गदर्शन से अपने पारसीप हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिवाली पर सुंदर भागवत कथा पारायण महंत स्वामी वक्तापद पर हुई । सर्व प्रथम श्रीहरिनाम स्मरण धुन-कीर्तन किया गया । धनतेरस धन पूजा, काली चौदश को श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन आरती, अन्नकूट किया गया । दिवाली का अलौकिक दर्शन, नये वर्ष में भव्य अन्नकूट दर्शन, बालको द्वारा सुंदर कार्यक्रम करके सबको खुश किये । महंत स्वामी ने कथा का सभी को पान करायो । यजमानो - महानुभावो मेहमानो रसोई की सेवा में लगे हरिभक्तो को महंत स्वामी ने सुंदर सन्मान किये । यजमानो ने पोथीयात्रा और वक्ताश्रीने पूजा का लाभ लिये । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

magazine@swaminarayan.in

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर सोलैया में मूर्ति प्रतिष्ठा विधि करते तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) अंजली मंदिर में कथा अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री। (३) कड़ी नूतन मंदिर के लाभ हेतु आयोजित कथा अवसर पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (४) कलीगांव (अहमदाबाद) तथा मोडासा मंदिर में दिवाली अवसर पर अन्नकूट दर्शन। (५) मुबारकपुरा मंदिर के ९ वें वार्षिक पाटोत्सव तथा भव्य शाकोत्सव अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (६) आजोल गाँव में पारायण अवसर पर कथामृत पान कराते हुए वक्ताश्री और अन्य संतगण।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

(१) ओकलैण्ड (न्यूझीलैंड), सीनेसिन्सन (अमेरिका), एडमिंटन (केनेडा) न्यूयोर्क (चैप्टर) मंदिर में दिपावली अन्नकूट दर्शन । (२) हेमिल्टन (न्यूझीलैन्ड) चैप्टर में तुलसी विवाह को उत्साह पूर्वक मनाते हुए हरिभक्त । (३) हेरो (लेन्डोन) मंदिर में दर्शन हेतु आये हुए इंडियन हाईकमिश्नर के साथ हमारे हरिभक्त ।

- श्री स्वामिनारायण मंदिर - नारायणपुरा अहमदाबाद, रजत जयंती महोत्सव ता. ९-२-१९ से १५-२-२०१९
- श्री स्वामिनारायण मंदिर - पोरडा भाटेरा (कठलाल) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ४-२-१९ से १०-२-२०१९
- श्री स्वामिनारायण मंदिर - झूंडाल मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. १४-२-१९ से २०-२-२०१९

WhatsApp No. +91 9909967104 Follow Us On

Praful Kharsani